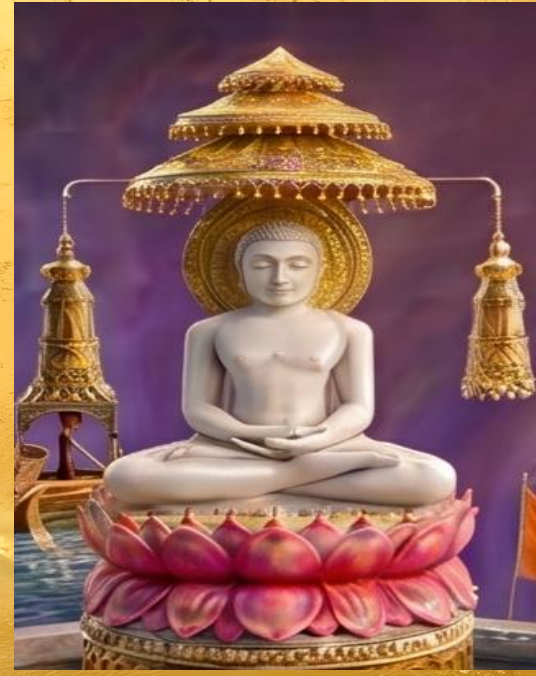




अश्वकर्ण करण एवं अपूर्वस्पर्धकरण

Presentation Developed By: Smt Sarika Vikas Chhabra


मंगलाचरण



सिद्धे जिणिंदचंदे, आयरिय-उवज्झाय-साहुगणे ।
वंदिय सम्महंसण-चरित्तलद्धिं परूवेमो ॥1॥

से काले ओवट्टणुवट्टण अस्सकण्ण आदोलं ।
करणं तियसण्णगयं, संजलणरसेसु वट्टिहिदि ॥463॥

- अन्वयार्थः (से काले) अनन्तर समय में (ओवट्टणुवट्टण) अपवर्तन-उद्वर्तन (अस्सकण्ण) अश्वकर्ण और (आदोलं) आदोल – ऐसे (तियसण्णगदं) तीन संज्ञा को प्राप्त हुआ (करणं) करण (संजलणरसेसु) संज्वलन कषाय के अनुभाग में (वट्टिहिदि) प्रवृत्त होता है ॥463॥



अश्वकर्ण करण

7 नोकषायों की क्षपणा के अनंतर समय से अश्वकर्णकरण प्रारंभ होता है ।

अश्वकर्णकरण, अपवर्तन-उद्वर्तन करण, आदोलकरण — ये एकार्थवाची नाम हैं ।

यहाँ प्रारंभ किये गये अनुभागकांडक के द्वारा 4 संज्वलन कषायों का अनुभाग-सत्त्व क्रोध से लोभ तक अनंतगुणाहीन और लोभ से क्रोध तक अनंतगुणा रूप हो जाता है । इसलिये इसे अपवर्तन-उद्वर्तन करण कहते हैं ।

जैसे घोड़े का कान मध्यभाग से अंत तक क्रम से पतला हो जाता है, वैसे ही इस प्रक्रिया द्वारा क्रोध संज्वलन से लोभ संज्वलन तक के अनुभाग स्पर्धक क्रम से हीन हो जाते हैं। इसलिये इसे अश्वकर्णकरण कहते हैं।



जैसे झूले में बांधी गयी दोनों रस्सियाँ प्रारंभ से अंत तक क्रम से घटती जाती है, वैसे ही संज्वलन क्रोध से संज्वलन लोभ तक अनुभाग घटता जाता है। इसलिये इसे आदोलकरण कहते हैं। (आदोल = झूला)



अनुभाग सत्त्व

अश्वकर्ण पूर्ण होने के पूर्व

संज्वलन
क्रोध

संज्वलन
मान

संज्वलन
माया

संज्वलन
लोभ

अश्वकर्ण के पश्चात्

संज्वलन
क्रोध

संज्वलन
मान

संज्वलन
माया

संज्वलन
लोभ

ताहे संजलणाणं, ठिदिसंतं संखवस्सयसहस्सं ।
अंतोमुहुत्तहीणो, सोलसवस्साणि ठिदिबंधो ॥464॥

- अन्वयार्थः (ताहे) अश्वकर्णकरण के प्रथम समय में (संजलणाणं) संज्वलन कषायों का (ठिदिसंतं) स्थिति-सत्त्व (संखवस्सय-सहस्सं) संख्यात हजार वर्ष और (ठिदिबंधो) स्थिति-बंध (अंतोमुहुत्तहीणो सोलसवस्साणि) अन्तर्मुहूर्त कम सोलह वर्ष होता है ॥464॥

अश्वकर्ण के प्रथम समय में बंध, सत्त्व

कर्म	स्थितिबंध	स्थिति-सत्त्व
4 संज्वलन	16 वर्ष - अंतर्मुहूर्त	संख्यात हजार वर्ष
3 घातिया	संख्यात हजार वर्ष	संख्यात हजार वर्ष
नाम-गोत्र, वेदनीय	संख्यात हजार वर्ष	असंख्यात हजार वर्ष

7 नोकषाय की क्षपणा के अंत में संज्वलन का बंध 16 वर्ष प्रमाण था। अब एक अंतर्मुहूर्त घटकर स्थितिबंध होता है। क्योंकि 32 वर्ष प्रमाण स्थितिबंध हो जाने से बंधापसरण का प्रमाण एक अंतर्मुहूर्त होता है।

रससंतं आगहिदं, खंडेण समं तु माणगे कोहे ।
मायाए लोभे वि य, अहियकमा होंति बंधे वि ॥465॥

- अन्वयार्थः (खंडेण समं) अनुभागकांडक सहित (आगहिदं) ग्रहण किया गया (रससंतं) अनुभाग-सत्त्व (माणगे कोहे मायाए लोभे वि य) मान, क्रोध, माया और लोभ में (अहियकमा) अधिक क्रम से (होंति) है।
- (बंधे वि) अनुभाग-बंध भी इसी क्रम से होता है ॥465॥

अश्वकर्णकरण के पूर्व तक संज्वलन-चतुष्क का अनुभाग इस क्रम से प्रवृत्त होता है-

कर्म	अल्प-बहुत्व	अंक संदृष्टि
संज्वलन मान	स्तोक	512
संज्वलन क्रोध	विशेष अधिक	512 + 3
संज्वलन माया	विशेष अधिक	512 + 6
संज्वलन लोभ	विशेष अधिक	512 + 9

- विशेष का प्रमाण अनंत स्पर्धक हैं । उतना अधिक-अधिक जानना ।
- अंक संदृष्टि में अधिक का प्रमाण 3 माना । मान का सत्त्व 512 माना ।
- इस प्रकार का ही सत्त्व संसार-अवस्था में रहता है । बंध भी इसी प्रकार से होता है ।
- अब अश्वकर्णकरण के कांडकघात के द्वारा इसे बदला जायेगा ।



अश्वकर्ण करण का फल

अश्वकर्ण के द्वारा यह अनुभाग-सत्त्व क्रोध से लोभ तक अनंतगुणा हीन क्रम से बन जाता है ।

ध्यान रहे सात नोकषायों की क्षपणा होते से ही अनुभाग का क्रम नहीं बदल जाता है । क्षपणा के अनंतर समय से प्रारंभ होने वाला नवीन अनुभागकांडक जब पूर्ण होता है, तब सत्त्व का क्रम बदलता है ।

रसखंडफड्ड्याओ, कोहादीया ह्वंति अहियकमा ।
अवसेसफड्ड्याओ, लोहादि अणंतगुणिकमा ॥466॥

- अन्वयार्थः (रसखंडफड्ड्याओ) अनुभागकांडक के लिए ग्रहण किये गये स्पर्धक (कोहादीया) क्रोधादि कषायों के (अहियकमा) विशेष अधिक क्रम से (ह्वंति) हैं।
- (अवसेसफड्ड्याओ) परन्तु शेष रहे स्पर्धक (लोहादि) लोभादिकों के (अणंतगुणिकमा) अनन्तगुणित क्रम से होते हैं ॥466॥

अश्वकर्णकरण के पूर्व अनुभाग-कांडक में घाते जाने वाले स्पर्धकों का अल्प-बहुत्व इस प्रकार था

कर्म	अल्प-बहुत्व
मान	स्तोक
क्रोध	विशेष अधिक
माया	विशेष अधिक
लोभ	विशेष अधिक

कांडकघात समाप्त होने पर शेष रहने वाला अनुभाग-सत्त्व भी इसी अल्प-बहुत्व के अनुसार था ।

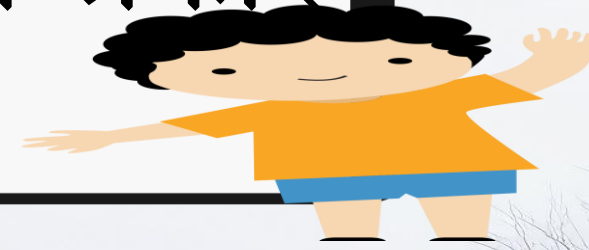
अश्वकर्णकरण में घात करने के लिये जिन कांडक स्पर्धकों को लिया जाता है, उनका अल्प-बहुत्व इस प्रकार है-

कषाय	अल्प-बहुत्व
क्रोध	स्तोक
मान	विशेष अधिक
माया	विशेष अधिक
लोभ	विशेष अधिक

अश्वकर्णकरण के
द्वारा किये गए
घात से कांडक के
अंत में सत्त्व का
क्रम बदलकर इस
प्रकार हो जाता

कर्म	अल्प-बहुत्व
लोभ	स्तोक
माया	अनंत गुणा
मान	अनंत गुणा
क्रोध	अनंत गुणा

प्रश्न – पूर्व का क्रम छोड़कर यहाँ इस प्रकार
क्यों घाता जाता है ?



जिन कर्मों का मंदतम उदय होकर क्षय होता है, उनका अनुभाग-सत्त्व अधिक घाता जाता है। जिनका मंद उदय होकर क्षय होता है, उनका अनुभाग-सत्त्व कुछ कम घाता जाता है ।

इस अनुसार चूँकि लोभ सबसे अंत में मंदतम उदयपूर्वक क्षय होगा। अतः उसके स्पर्धक सबसे अधिक घाते जाते हैं ।

माया आदि का मंदतर, मंद उदय होने से माया का कम, मान का माया से, मान का क्रोध से कम और क्रोध का सबसे कम घात होता है ।

पूर्व का अनुभाग

क्रोध	मान	माया	लोभ
515	512	518	521

अंक संदृष्टि- अनंत का प्रमाण = 4

प्रत्येक का अनंत बहुभाग; अनुभाग कांडक के लिये ग्रहण करता है ।

$$\frac{512}{4} = 128 \text{ एक भाग; बहुभाग} = 384$$

इसमें जो अधिक स्पर्धक हैं, वह मिलाने पर

$$384 + 3 = 387 \text{ यह क्रोध के कांडकरूप स्पर्धक हैं ।}$$

$$\text{शेष रहा अनुभाग-सत्त्व} = 515 - 387 = 128 \text{ स्पर्धक}$$

क्रोध के स्पर्धक

मान के स्पर्धक

पूर्व का बहुभाग + एक भाग का बहुभाग

$$384 + 128 \times \frac{3}{4} = 384 + 96$$

$$= 480 \text{ मान का कांडक}$$

यहाँ अतिरिक्त स्पर्धक नहीं होने से उसे नहीं जोड़ा है ।

$$\text{शेष अनुभाग-सत्त्व} = 512 - 480 = 32$$

पूर्व के दो बहुभाग + एक भाग का बहुभाग + अधिक स्पर्धक

$$(384 + 96) + 32 \times \frac{3}{4} + 6 = 480 + 24 + 6$$

$$= 510 \text{ माया का कांडक}$$

$$\text{शेष अनुभाग-सत्त्व} = 518 - 510 = 8$$

माया के स्पर्धक

लोभ के स्पर्धक

पूर्व 3 बहुभाग + एकभाग का बहुभाग + अधिक स्पर्धक

$$(384 + 96 + 24) + 8 \times \frac{3}{4} + 9$$

$$504 + 6 + 9 = 519 \text{ लोभ कांडक}$$

$$\text{शेष अनुभाग-सत्त्व} = 521 - 519 = 2$$

इस प्रकार यह अनुभाग की संदृष्टि है

	क्रोध	मान	माया	लोभ
पूर्व अनुभाग	515	512	518	521
कांडक अनुभाग	387	480	510	519
अवशेष अनुभाग	128	32	8	2

अर्थ संदृष्टि:
4 कषायों के स्पर्धक

एक गुणहानि स्पर्धक शलाका = ९,
नाना गुणहानि = ना

मान के स्पर्धक = ९ ना

क्रोध के कुछ अधिक

$$= ९ ना + \frac{९ना}{ख}$$

$$= ९ ना \times \frac{ख}{ख} + \frac{९ना}{ख}$$

$$= \frac{९ना \times ख + ९ना}{ख}$$

$$= \frac{९ना \times (ख + 1)}{ख}$$

माया के कुछ अधिक

$$= \frac{९ना \times (ख + 1)}{ख} + \frac{९ना}{ख}$$

$$= \frac{९ना \times (ख + 1) + ९ना}{ख}$$

$$= \frac{९ना \times (ख + 1 + 1)}{ख}$$

$$= \frac{९ना \times (ख + 2)}{ख}$$

इसी प्रकार
लोभ के स्पर्धक

$$= \frac{९ना \times (ख + 3)}{ख}$$

अश्वकर्णकरण के प्रारंभ में संज्वलन-4 के अनुभागकांडकों का प्रमाण, शेष अनुभाग

	क्रोध	मान	माया	लोभ
अधिक प्रमाण	$\frac{९ ना 1}{ख}$	0	$\frac{९ ना 2}{ख}$	$\frac{९ ना 3}{ख}$
प्रथम बहुभाग	$\frac{९ ना \times (ख - 1)}{ख}$	$\frac{९ ना \times (ख - 1)}{ख}$	$\frac{९ ना \times (ख - 1)}{ख}$	$\frac{९ ना \times (ख - 1)}{ख}$
द्वितीय बहुभाग	X	$\frac{९ ना \times (ख - 1)}{ख ख}$	$\frac{९ ना \times (ख - 1)}{ख ख}$	$\frac{९ ना \times (ख - 1)}{ख ख}$
तृतीय बहुभाग	X	X	$\frac{९ ना \times (ख - 1)}{ख ख ख}$	$\frac{९ ना \times (ख - 1)}{ख ख ख}$
चतुर्थ बहुभाग	X	X	X	$\frac{९ ना \times (ख - 1)}{ख ख ख ख}$
अवशेष अनुभाग	$\frac{९ ना}{ख}$	$\frac{९ ना}{ख ख}$	$\frac{९ ना}{ख ख ख}$	$\frac{९ ना}{ख ख ख ख}$

अंक
संदृष्टि

अश्वकर्णकरण के प्रारंभ में संज्वलन-4 के
अनुभागकांडकों का प्रमाण, शेष अनुभाग

	क्रोध	मान	माया	लोभ
अधिक प्रमाण	3	0	6	9
प्रथम बहुभाग	384	384	384	384
द्वितीय बहुभाग	X	96	96	96
तृतीय बहुभाग	X	X	24	24
चतुर्थ बहुभाग	X	X	X	6
कुल कांडक	387	480	510	519
अवशेष अनुभाग	128	32	8	2

ताहे संजलणाणं, देसावरफड्डयस्स हेट्ठादो ।
णंतगुणूणमपुव्वं, फड्डयमिह कुणदि हु अणंतं ॥467॥

- अन्वयार्थः (इह) यहाँ अर्थात् अश्वकर्णकरण के प्रथम समय में (ताहे संजलणाणं) संज्वलन कषायों के (देसावरफड्डयस्स) देशघाति जघन्य स्पर्धक के (हेट्ठादो) नीचे (णंतगुणूणं) अनन्तगुणित हीन अनुभागरूप (अणंतं) अनन्त (अपुव्वं फड्डयं) अपूर्व स्पर्धकों को (कुणदि हु) करता है ॥467॥

अनुभाग को समझने के लिए इसके अवयव बताते हैं ।

अविभाग-
प्रतिच्छेद

लोभ आदि
फलदान
की शक्ति
का अंश

वर्ग

अविभाग
प्रतिच्छेदों
का समूह

वर्गणा

वर्गों का
समूह

स्पर्धक

वर्गणाओं
का समूह

गुणहानि

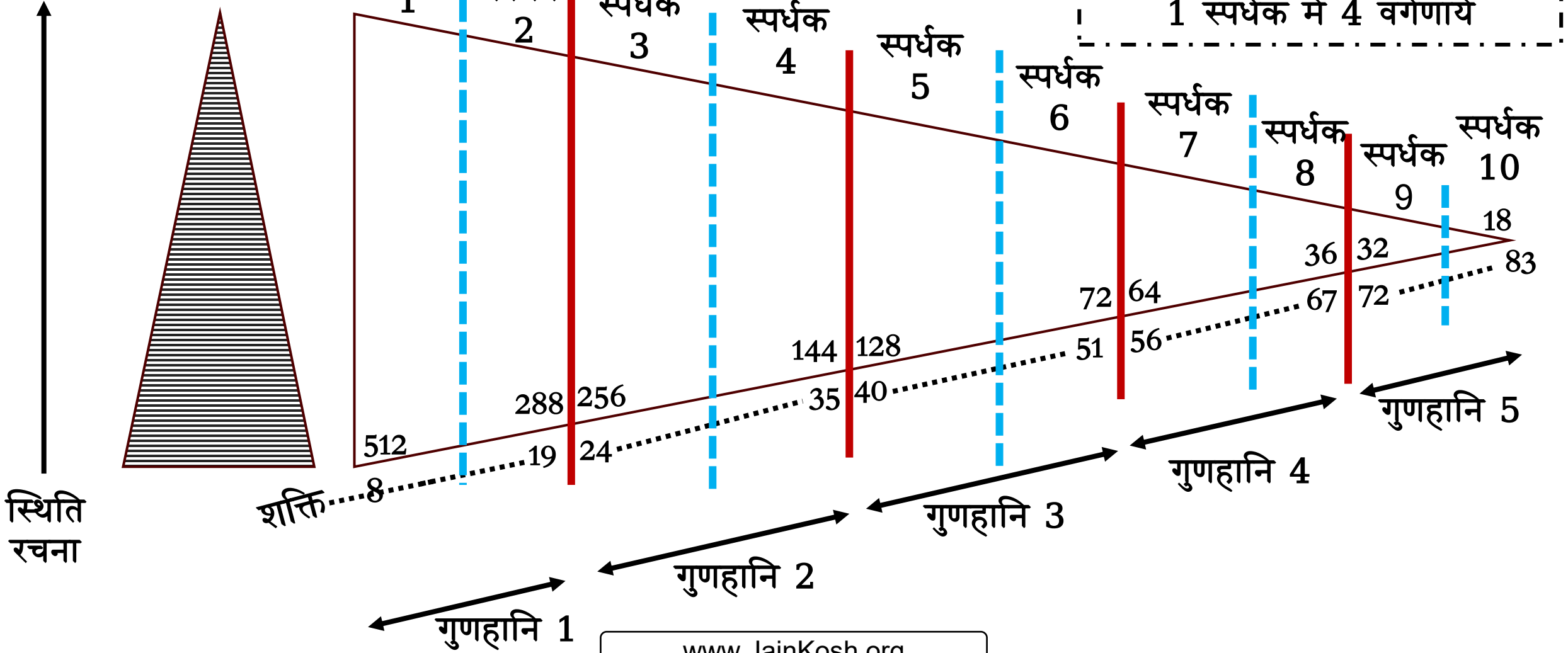
स्पर्धकों का
समूह

नाना गुणहानि

गुणहानियों
का समूह

अनुभाग रचना

माना - 1 गुणहानि में 2 स्पर्धक
1 स्पर्धक में 4 वर्गणायें



शक्ति अपेक्षा वर्णन

जघन्य वर्गणा के 1 वर्ग में सबसे जघन्य शक्ति पायी जाती है । उसको संदृष्टि में ८ माना ।

अगली वर्गणा के 1 वर्ग की शक्ति इससे 1 अधिक पायी जाती है । संदृष्टि: ९

अगली वर्गणा के 1 वर्ग की शक्ति इससे 1 अधिक पायी जाती है । संदृष्टि: १०

ऐसे 1 स्पर्धक की प्रत्येक वर्गणा के 1-1 वर्ग की शक्ति एक-एक अविभाग-प्रतिच्छेद से बढ़ाना ।

उदाहरण में एक स्पर्धक की वर्गणा संख्या 4 मानी है ।

११
१० १०
९ ९ ९
८ ८ ८ ८
प्रथम स्पर्धक

यह स्पर्धक इस प्रकार से दर्शाया जाता है ।

द्वितीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के 1 वर्ग की शक्ति
जघन्य वर्ग से दुगुनी होती है ।

११

१८ १८

१७ १७ १७

१६ १६ १६ १६

द्वितीय स्पर्धक

सूत्र: स्पर्धक के जघन्य वर्ग की शक्ति = जघन्य वर्ग ×
स्पर्धक की संख्या

द्वितीय स्पर्धक की जघन्य शक्ति = $८ \times २ = १६$

इसके पश्चात् अगली-अगली वर्गणा के वर्ग एक-एक
शक्ति से बढ़ते हैं ।

तृतीय स्पर्धक की जघन्य शक्ति = $८ \times 3 = २४$

चतुर्थ स्पर्धक की जघन्य शक्ति = $८ \times 4 = ३२$

ऐसे क्रम से अनंत स्पर्धकों में शक्ति बढ़ती-बढ़ती जानना ।

२७
२६ २६
२५ २५ २५
२४ २४ २४ २४
तृतीय स्पर्धक

३५
३४ ३४
३३ ३३ ३३
३२ ३२ ३२ ३२
चतुर्थ स्पर्धक

४३
४२ ४२
४१ ४१ ४१
४० ४० ४० ४०
पंचम स्पर्धक

पूर्व और अपूर्व स्पर्धक में अन्तर

पूर्व स्पर्धक

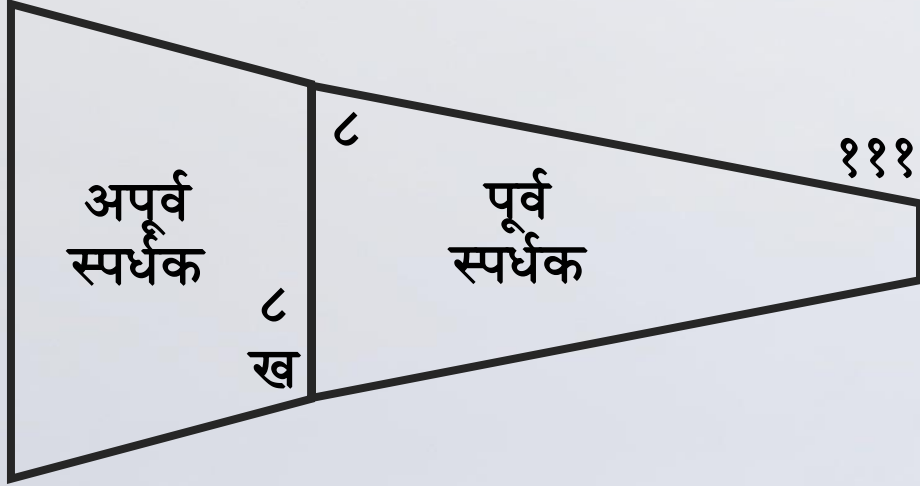
संसार-अवस्था में पाए
जाने वाले कर्म की शक्ति
समूहरूप

अपूर्व स्पर्धक

यहाँ अश्वकर्णकरण के प्रथम समय से 4 संज्वलन कषाय के पूर्व स्पर्धकों को अपकर्षित करके पूर्व स्पर्धकों के भी नीचे अनंतगुणाहीन शक्ति वाले स्पर्धकों की रचना करता है ।

ये पूर्व स्पर्धकों से हीन शक्ति वाले स्पर्धक; अपूर्व स्पर्धक कहलाते हैं।

अपूर्व स्पर्धक



ख।ख

पूर्व स्पर्धक की जघन्य वर्गणा के अनुभाग से अपूर्व स्पर्धक की उत्कृष्ट वर्गणा का अनुभाग अनंतगुणाहीन है ।

अपूर्व स्पर्धक की उत्कृष्ट वर्गणा से अपूर्व स्पर्धक की जघन्य वर्गणा का अनुभाग अनंतगुणाहीन है क्योंकि अनंत अपूर्व स्पर्धक रचे जाते हैं ।

प्रश्न- पूर्व स्पर्धकों से अपूर्व स्पर्धकों का अनुभाग अनंतगुणाहीन है, तो उन्हें कृष्टि क्यों नहीं कहा जाता है?

उत्तर – जिन वर्गणाओं में अविभागप्रतिच्छेद क्रम से उत्तरोत्तर विशेष अधिक या हीन होते हैं, उन्हें स्पर्धक कहते हैं। जिन वर्गणाओं में अविभागप्रतिच्छेद अनंतगुणा अधिक या हीन होते हैं, उन्हें कृष्टि कहते हैं।

चूंकि इन अपूर्व स्पर्धक की वर्गणाओं में एक से दूसरे में अनंतगुणापना नहीं पाया जाता है। इसलिये इन्हें कृष्टि नहीं कहते हैं; अपूर्व स्पर्धक कहते हैं।

जैसे जघन्य अपूर्व स्पर्धक इस प्रकार दिखता है –

$$\begin{array}{r} \text{८} \\ \text{ख} | \text{ख} + 3 \\ \text{८} \\ \text{ख} | \text{ख} + 2 \\ \text{८} \\ \text{ख} | \text{ख} + 1 \\ \text{८} \\ \text{ख} | \text{ख} \end{array}$$

गणणादेयपदेसग-गुणहाणिट्टाणफड्डयाणं तु ।
होदि असंखेज्जदिमं, अवरान्दु वरं अणंतगुणं ॥468॥

- अन्वयार्थः (गणणादेयपदेसग-गुणहाणिट्टाणफड्डयाणं तु) गणना की अपेक्षा अपूर्वस्पर्धक एकप्रदेश गुणहानिस्थानान्तर के स्पर्धकों के (असंखेज्जदिमं) असंख्यातवें भाग प्रमाण है।
- (अवरान्दु वरं) जघन्य अपूर्व स्पर्धक से उत्कृष्ट अपूर्व स्पर्धक (अणंतगुणं) अनन्तगुणा है अर्थात् जघन्य अपूर्व स्पर्धक के अविभागप्रतिच्छेदों से उत्कृष्ट अपूर्व स्पर्धकों के अविभाग-प्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं ॥468॥

प्रथम समय में बनाये गये अपूर्व स्पर्धक

$$\frac{\text{एक गुणहानि के स्पर्धक}}{\text{अपकर्षण भागहार} \times \text{असंख्यात}} = \frac{९}{\text{ओ} \times \text{०}}$$

यह अभव्य राशि से अनंत गुणा तथा सिद्ध राशि का अनंतवां भाग है ।

शक्ति की अपेक्षा जघन्य अपूर्व स्पर्धक से उत्कृष्ट अपूर्व स्पर्धक अनंतगुणा है ।

अपूर्व स्पर्धकों में अनुभाग

- अपूर्व स्पर्धकों में प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा का अनुभाग (जीवराशि \times अनंत) है। इसे अविभागप्रतिच्छेदों से कहा जाता है। प्रथम वर्गणा के प्रत्येक वर्ग में (जीवराशि \times अनंत) अविभागप्रतिच्छेद हैं।
- एक वर्गणा में अनंत वर्ग हैं। वर्गों की संख्या में एक वर्ग की शक्ति से गुणा करने पर एक वर्गणा की पूरी शक्ति आती है।
- प्रथम वर्गणा के अविभागप्रतिच्छेद = वर्ग-संख्या \times 1 वर्ग के अविभागप्रतिच्छेद
- मानाकि प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के वर्ग = 512
- एक स्पर्धक की वर्गणा शलाका = 4, चय = 4, जघन्य शक्ति = 8
- प्रथम वर्गणा की शक्ति = $512 \times 8 = 4096$

द्वितीय स्पर्धक की शक्ति

दूसरे स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के संपूर्ण अविभागप्रतिच्छेद प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभागप्रतिच्छेद से कुछ कम दुगुने हैं ।

चूंकि प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा में अनंत अनुभाग है, तो कुछ कम दुगुना याने अनंत बहुभाग अधिक शक्ति दूसरे स्पर्धक की आदि वर्गणा में है ।

500	११
504	१०
508	९
512	८
प्रदेश	शक्ति

प्रथम
स्पर्धक

484	१९
488	१८
492	१७
496	१६
प्रदेश	शक्ति

द्वितीय
स्पर्धक

अनंत का प्रमाण = 16

द्वितीय स्पर्धक की आदि वर्गणा = $496 \times 16 = 7936$ अथवा

प्रथम स्पर्धक की आदि वर्गणा + $\frac{\text{प्रथम स्पर्धक की आदि वर्गणा} \times (\text{अनंत}-1)}{\text{अनंत}}$

$$4096 + \frac{4096 \times (16-1)}{16} = 4096 + \frac{4096 \times 15}{16}$$

$$= 4096 + 3840 = 7936$$

द्वितीय
स्पर्धक
की
शक्ति



प्रथम स्पर्धक की आदि वर्गणा से द्वितीय स्पर्धक की आदि वर्गणा के दुगुना होने में कितना कम है ?

- = स्पर्धक की वर्गणा शलाका \times चय \times द्वितीय स्पर्धक की आदि वर्गणा के 1 वर्ग की शक्ति
- = $4 \times 4 \times 16 = 256$
- 4096×2 से 7936 , 256 कम है ।
- $4096 \times 2 = 7936 + 256$
- $8192 = 8192$
- चूंकि प्रथम स्पर्धक से द्वितीय स्पर्धक में चयहीन द्रव्य है । अतः जितनी वर्गणाएँ द्वितीय स्पर्धक में हीन हैं, उतनी शक्ति वहाँ दुगुना प्रमाण होने में कम है ।

तृतीयादि स्पर्धकों की शक्ति

- इसी प्रकार द्वितीय स्पर्धक की आदि वर्गणा से तृतीय स्पर्धक की आदि वर्गणा कुछ कम आधे से अधिक है ।
- तृतीय की आदि वर्गणा = द्वितीय स्पर्धक की आदि वर्गणा + $\frac{\text{द्वितीय की आदि वर्गणा}}{2}$ -
- $7936 + \frac{7936}{2} - = 7936 + 3968 -$
- कितना कम करना है ?
- स्पर्धक की वर्गणा शलाका \times चय \times तृतीय स्पर्धक की आदि वर्गणा के 1 वर्ग की शक्ति
- $4 \times 4 \times 24 = 16 \times 24 = 384$
- $7936 + 3968 - 384 = 11520$ जो कि 480×24 के बराबर है ।

चतुर्थ स्पर्धक की शक्ति

$$\text{तृतीय} + \frac{\text{तृतीय}}{3} -$$

पंचम स्पर्धक की शक्ति

$$\text{चतुर्थ} + \frac{\text{चतुर्थ}}{4} -$$

जघन्य परित असंख्यातवा
स्पर्धक

$$\text{उत्कृष्ट संख्यातवां स्पर्धक} + \frac{\text{संख्यातवां स्पर्धक}}{\text{उत्कृष्ट संख्यात}} -$$

जघन्य परित अनंतवा स्पर्धक

$$\text{उत्कृष्ट असंख्यातवां स्पर्धक} + \frac{\text{उत्कृष्ट असंख्यातवां स्पर्धक}}{\text{उत्कृष्ट असंख्यात}} -$$

अंतिम अपूर्व स्पर्धक

$$\text{द्विचरम अपूर्व स्पर्धक} + \frac{\text{द्विचरम अपूर्व स्पर्धक}}{\text{द्विचरम अपूर्व स्पर्धक की संख्या}} -$$

अंतिम अपूर्वस्पर्धक की आदि वर्गणा से पूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा अनंतगुणा है ।
क्योंकि पूर्वस्पर्धक की जघन्य शक्ति से भी अनंत गुणाहीन शक्ति से अपूर्वस्पर्धक रचे
जाते हैं ।



एक वर्ग के अविभागप्रतिच्छेद
= व

चय = वि

वर्गणा शलाका = ४

स्पर्धक शलाका = ९

2 गुणहानि १६

स्पर्धक संख्या	शक्ति संदृष्टि
1	व वि १६
2	व वि १६ । २ -
3	व वि १६ । ३ -
⋮	⋮
अंतिम अपूर्व स्पर्धक	व वि १६ । ९ - ओ ०

प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभागप्रतिच्छेद = व वि १६
क्योंकि प्रथम वर्गणा के प्रदेश = (दो गुणहानि × चय) प्रमाण होते हैं ।

पुष्पाण फड्डयाणं, छेत्तूण असंखभागदब्बं तु ।
कोहादीणमपुब्बं, फड्डयमिह कुणदि अहियकमा ॥469॥

• अन्वयार्थः (पुष्पाण फड्डयाणं) पूर्व स्पर्धकों को (छेत्तूण) छेदकर
(असंखभागदब्बं तु) असंख्यातवे भागमात्र द्रव्य को ग्रहण करके
(इह) यहाँ (कोहादीणं) क्रोधादिकों के (अपुब्बं फड्डयं) अपूर्व
स्पर्धकों को (अहियकमा) अधिक क्रम से (कुणदि) रचता है
॥469॥

संज्वलन चतुष्क का पूर्व स्पर्धकरूप द्रव्य इतना है -

पूर्व
स्पर्धकों
का द्रव्य

$\frac{व१२ =}{२।४}$	$\frac{व१२ \equiv}{२।४}$	$\frac{व१२ -}{२।४}$	$\frac{व१२ +}{२।४}$
क्रोध	मान	माया	लोभ

याने लगभग मोहनीय का 8वां अंश एक-एक कषाय का पूर्व स्पर्धकरूप द्रव्य है ।

सूक्ष्मदृष्टि से लोभ का द्रव्य 8वें भाग से कुछ अधिक है, माया का द्रव्य 8वें भाग से कुछ कम है, क्रोध का उससे और थोड़ा कम है तथा मान का सबसे कम है ।

क्रोध का द्रव्य

नोकषाय का सारा द्रव्य भी अब संज्वलन क्रोध में परिणत हो चुका है । अतः क्रोध का द्रव्य इन सबसे अधिक $\frac{5}{8}$ भाग प्रमाण हो गया है । यथा

पूर्व क्रोध द्रव्य + नोकषाय द्रव्य = क्रोध द्रव्य

$$\frac{व१२=}{८} + \frac{व१२}{२} = \frac{व१२=}{८} + \frac{व१२|४}{२|४}$$

$$= \frac{व१२=|(१+४)}{८} = \frac{व१२|५}{८}$$

अपूर्व स्पर्धकों की रचना

इस पूर्व स्पर्धक द्रव्य में अपकर्षण भागहार का भाग देकर प्राप्त एक भाग प्रमाण द्रव्य से अपूर्व स्पर्धकों की रचना की जाती है ।

उसमें भी इन अपूर्व स्पर्धकों का प्रमाण क्रोध से लोभ तक क्रमशः बढ़ता हुआ जाता है ।

क्रोध से मान आदि के अपूर्व स्पर्धक अनंत भाग अधिक हैं ।

जैसे माना कि क्रोध के अपूर्व स्पर्धक = 16, अनंत का प्रमाण
4, 5, 6

अपूर्वस्पर्धक

	क्रोध	मान	माया	लोभ
		क्रोध के अपूर्व स्पर्धक $+$ $\frac{\text{क्रोध के अपूर्व स्पर्धक}}{4}$ $= 16 + \frac{16}{4} = 20$	मान के अपूर्व स्पर्धक $+$ $\frac{\text{मान के अपूर्व स्पर्धक}}{5}$ $= 20 + \frac{20}{5} = 24$	माया के अपूर्व स्पर्धक $+$ $\frac{\text{माया के अपूर्व स्पर्धक}}{6}$ $= 24 + \frac{24}{6} = 28$
अंक संदष्टि	16	$\frac{16 \times 5}{4}$	$\frac{20 \times 6}{5}$	$\frac{24 \times 7}{6}$
अर्थ संदष्टि	९ ओ ०	९ (ख + 1) ओ ० ख	९ (ख + 2) ओ ० ख	९ (ख + 3) ओ ० ख

समखंडं सविसेसं, णिक्खवियोकट्टिदादु सेसधणं ।
पक्खेवकरणसिद्धं, इगिगोउंछेण उभयत्थ ॥470॥

- अन्वयार्थः (ओकट्टिदादु) अपकर्षित द्रव्य में से अपूर्वस्पर्धकों में (समखंडं सविसेसं) विशेषसहित समखण्डरूप द्रव्य को (णिक्खविय) निक्षिप्त करके (सेसधणं) शेष रहा द्रव्य (इगिगोउंछेण) एक गोपुच्छ द्वारा (उभयत्थ) उभयत्र अर्थात् पूर्व-अपूर्व स्पर्धकों में देता है। इस प्रकार (पक्खेवकरणसिद्धं) प्रक्षेपणकरण सिद्ध हुआ ॥470॥

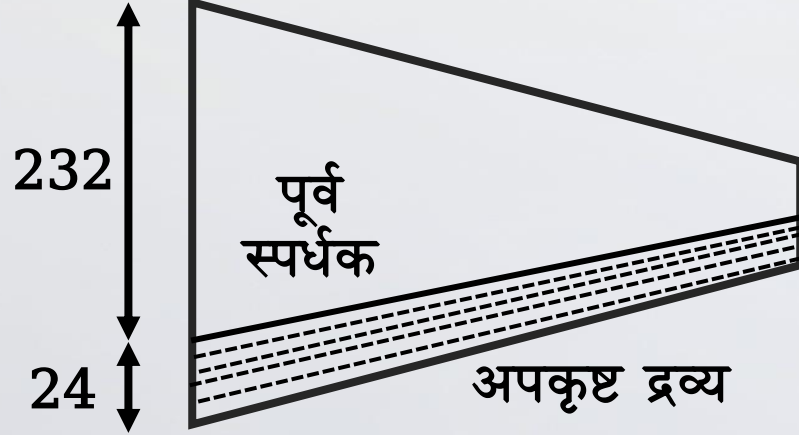
अपूर्व स्पर्धकों की रचना

पूर्व स्पर्धकों का द्रव्य गोपुच्छाकार रूप से स्थित है । इसके नीचे जो अपूर्व स्पर्धक बनाये जा रहे हैं, वे भी इसी गोपुच्छ को रखते हुए बनाये जायेंगे । याने अपूर्व-पूर्व स्पर्धकों का एक ही गोपुच्छ रहेगा ।

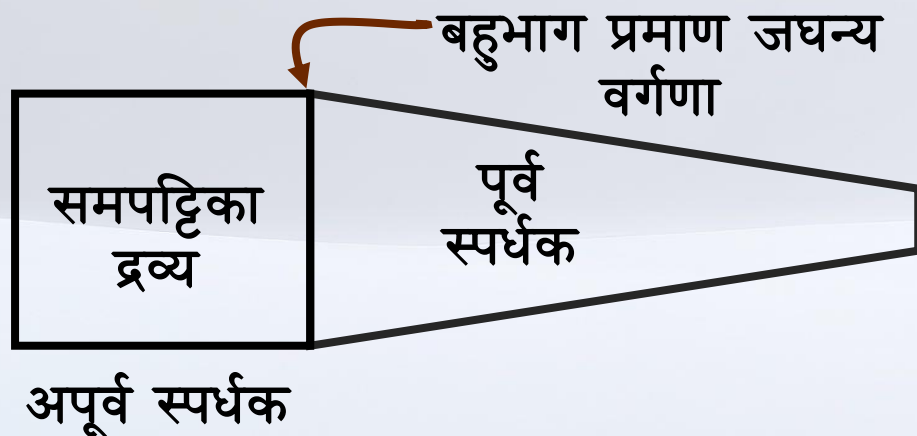
इस हेतु अपूर्व स्पर्धकों हेतु अपकृष्ट द्रव्य का विभाजन इस प्रकार किया जायेगा –
जघन्य वर्गणा का द्रव्य = व

इसमें से एक भाग द्रव्य अपकर्षण करके अपूर्व स्पर्धकों में दिया जायेगा । तब यहाँ जघन्य वर्गणा में बहुभाग द्रव्य शेष रहता है । इस वर्गणा प्रमाण द्रव्य अपूर्व स्पर्धक की प्रत्येक वर्गणा में देने पर समपट्टिका द्रव्य होता है ।

समपट्टिका द्रव्य – अंक संदृष्टि



माना जघन्य वर्गणा = 256;
उसमें से 24 वर्गों का अपकर्षण हुआ, तो
शेष वर्गणा का प्रमाण -
 $256 - 24 = 232$



जघन्य वर्गणा = 232
मानाकि अपूर्व स्पर्धक = 4
अपूर्व स्पर्धक की वर्गणायें = $4 \times 4 = 16$
तो समपट्टिका द्रव्य = $16 \times 232 = 3712$

अपूर्व स्पर्धकों में चयद्रव्य

अब अपूर्व स्पर्धकों में चयद्रव्य देने पर पूर्व-अपूर्व स्पर्धकों की एक गोपुच्छा बन जाती है ।

पूर्व स्पर्धकों की प्रथम गुणहानि में जो चय है, उससे अपूर्व स्पर्धक में चय दुगुणा होगा क्योंकि नीचे से ऊपर चय आधा-आधा होता है ।

अपूर्व स्पर्धकों का चय = पूर्व स्पर्धकों की प्रथम गुणहानि का चय \times 2

पूर्व स्पर्धक की प्रथम गुणहानि का चय = $\frac{\text{पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा}}{\text{दो गुणहानि}}$

माना कि प्रथम गुणहानि का चय = 16, तो अपूर्व स्पर्धक का चय = $16 \times 2 = 32$

अंतिम अपूर्व स्पर्धक की अंतिम वर्गणा में यह एक चय देंगे । द्विचरम वर्गणा में दो, त्रिचरम वर्गणा में तीन – ऐसे नीचे-नीचे एक-एक अधिक चय देंगे ।

ऐसे करने पर अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा में कितने चय दिये जायेंगे? जितनी कुल वर्गणाओं का प्रमाण है, उतने चय प्रथम वर्गणा में दिये जायेंगे ।

यहाँ अपूर्व स्पर्धक 4 माने हैं । एक स्पर्धक की वर्गणा = 4 है । तो कुल वर्गणाएँ $4 \times 4 = 16$ हुई । तब अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा में 16 चय दिये जायेंगे ।

ऐसे चय दिये जाने पर पूर्व-अपूर्व स्पर्धकों की एक गोपुच्छा हो जाती है ।

अपूर्व स्पर्धकों में चय द्रव्य

अपूर्व स्पर्धकों में चयद्रव्य

शेष अपकृष्ट द्रव्य

इतना द्रव्य देने के पश्चात् भी अपकृष्ट द्रव्य शेष रहता है । क्योंकि यह अपूर्व स्पर्धकों का द्रव्य; अपकृष्ट द्रव्य का एकभाग प्रमाण द्रव्य ही है ।

अपकृष्ट द्रव्य – अपूर्व स्पर्धक द्रव्य = शेष द्रव्य

$$39424 - 8064 = 31360$$

इस शेष द्रव्य को समस्त अपूर्व-पूर्व स्पर्धकों में चयहीन क्रम से दिया जायेगा ।

शेष द्रव्य का विभाग

अपूर्वस्पर्धक की वर्गणा प्रमाण 1 शलाका है, तो पूर्व स्पर्धकों की वर्गणा प्रमाण में कितनी शलाकाएँ होंगी ?

$$\frac{1}{\text{ओ } a} \times \frac{\text{८} | ३}{२} = \frac{३}{\text{ओ } a} = \text{ओ } ० | ३$$

अंक संदृष्टि से – एक गुणहानि में पूर्व स्पर्धक 16, 1 स्पर्धक की वर्गणा = 4

तो गुणहानि आयाम = $16 \times 4 = 64$; $\frac{3}{2}$ गुणहानि = $64 \times \frac{3}{2} = 96$

अपूर्व स्पर्धक की वर्गणाएँ = 16;

16 वर्गणाओं की 1 शलाका है, तो 96 वर्गणाओं की कितनी शलाका होगी ? $\frac{1}{16} \times 96 = 6$

शेष द्रव्य का विभाग

पूर्व स्पर्धक शलाका + अपूर्व स्पर्धक शलाका = उभय शलाका

अंक संदृष्टि: $6 + 1 = 7$

अर्थ संदृष्टि: ओ $\overset{3}{\underset{2}{\circ}}$ + 1

पूर्व स्पर्धक द्रव्य = $\frac{\text{शेष अपकृष्ट द्रव्य}}{\text{उभय शलाका शलाका}} \times \text{पूर्व स्पर्धक शलाका}$

$$\frac{31360}{7} \times 6 = \frac{\text{व १२ ओ } \overset{3}{\underset{2}{\circ}} -}{\text{ओ ओ } \overset{3}{\underset{2}{\circ}} \times \left(\text{ओ } \overset{3}{\underset{2}{\circ}} + 1 \right)} \times \text{ओ } \overset{3}{\underset{2}{\circ}}$$

$$= \frac{\text{व १२ ओ } \overset{3}{\underset{2}{\circ}} -}{\text{ओ } \left(\text{ओ } \overset{3}{\underset{2}{\circ}} + 1 \right)}$$

अपूर्व स्पर्धक द्रव्य = $\frac{\text{शेष अपकृष्ट द्रव्य}}{\text{उभय शलाका}}$

$$\frac{31360}{7} = \frac{\text{व १२ ओ } \overset{3}{\underset{2}{\circ}} -}{\text{ओ ओ } \overset{3}{\underset{2}{\circ}} \times \left(\text{ओ } \overset{3}{\underset{2}{\circ}} + 1 \right)}$$

समपट्टिका आदि द्रव्य + शेष द्रव्य में से प्राप्त द्रव्य

$$\bullet 8064 + 4480 = 12544$$

सर्व
अपूर्व
स्पर्धक
द्रव्य

अंक संदृष्टि

अपूर्व
स्पर्धकों
में द्रव्य
का
बंटवारा



$$\frac{\text{सर्व द्रव्य}}{\text{गच्छ}} = \text{मध्यमधन}$$

$$\frac{12544}{16} = 784$$

$$\frac{\text{मध्यमधन}}{2 \text{ गुणहानि} - \frac{\text{गुणहानि} - 1}{2}} = \text{चय}$$

$$\begin{aligned} &= \frac{784}{32 - \frac{16-1}{2}} = \frac{784}{32 - \frac{15}{2}} \\ &= \frac{784 \times 2}{64 - 15} = \frac{784 \times 2}{49} \\ &= 32 \end{aligned}$$

$$\text{चय} \times \text{दो गुणहानि} = \text{प्रथम वर्गणा} \quad 32 \times 32 = 1024$$

द्वितीयादि वर्गणा में एक-एक चय कम द्रव्य दिया जाता है ।

अंतिम वर्गणा में (आयाम - 1) प्रमाण चय कम द्रव्य दिया जाता है ।

$$1024 - (16 - 1) \times 32 = 1024 - 15 \times 32$$

$$= 1024 - 480 = 544 \text{ (अंतिम वर्गणा का द्रव्य)}$$

पूर्व स्पर्धकों में द्रव्य का बंटवारा

पूर्व स्पर्धकों में द्रव्य का विभाग 'दिव्वड्डुगुणभाजिदे पढमा' इस सूत्र से देना चाहिए । क्योंकि यहाँ अनेक गुणहानियाँ उपलब्ध हैं ।

$$\frac{\text{सर्व द्रव्य}}{\frac{3}{2} \text{ गुणहानि}} = \text{प्रथम वर्गणा} \quad \frac{26880}{64 \times \frac{3}{2}} = \frac{26880}{96} = 280$$

$$\frac{\text{प्रथम वर्गणा}}{\text{दो गुणहानि}} = \text{चय} \quad \frac{280}{128} = \text{चय (संदृष्टि में 'वि')}$$

यहाँ अंक संदृष्टि में चय का प्रमाण पूर्णांक में नहीं आता है । वास्तविक गणित में ठीक आता है ।

पूर्व स्पर्धकों में द्रव्य का बंटवारा

पूर्व स्पर्धकों की प्रथम गुणहानि की प्रथम वर्गणा में 280 द्रव्य दिया जाता है ।

पूर्व स्पर्धकों की प्रथम गुणहानि की द्वितीय वर्गणा में एक चयहीन द्रव्य दिया जाता है ।

इस प्रकार प्रथम गुणहानि की अंतिम वर्गणा पर्यंत जानना ।

पूर्व स्पर्धक की द्वितीय गुणहानि की प्रथम वर्गणा में पूर्व गुणहानि की प्रथम वर्गणा से आधा द्रव्य प्राप्त होता है एवं चय भी आधा होता है ।

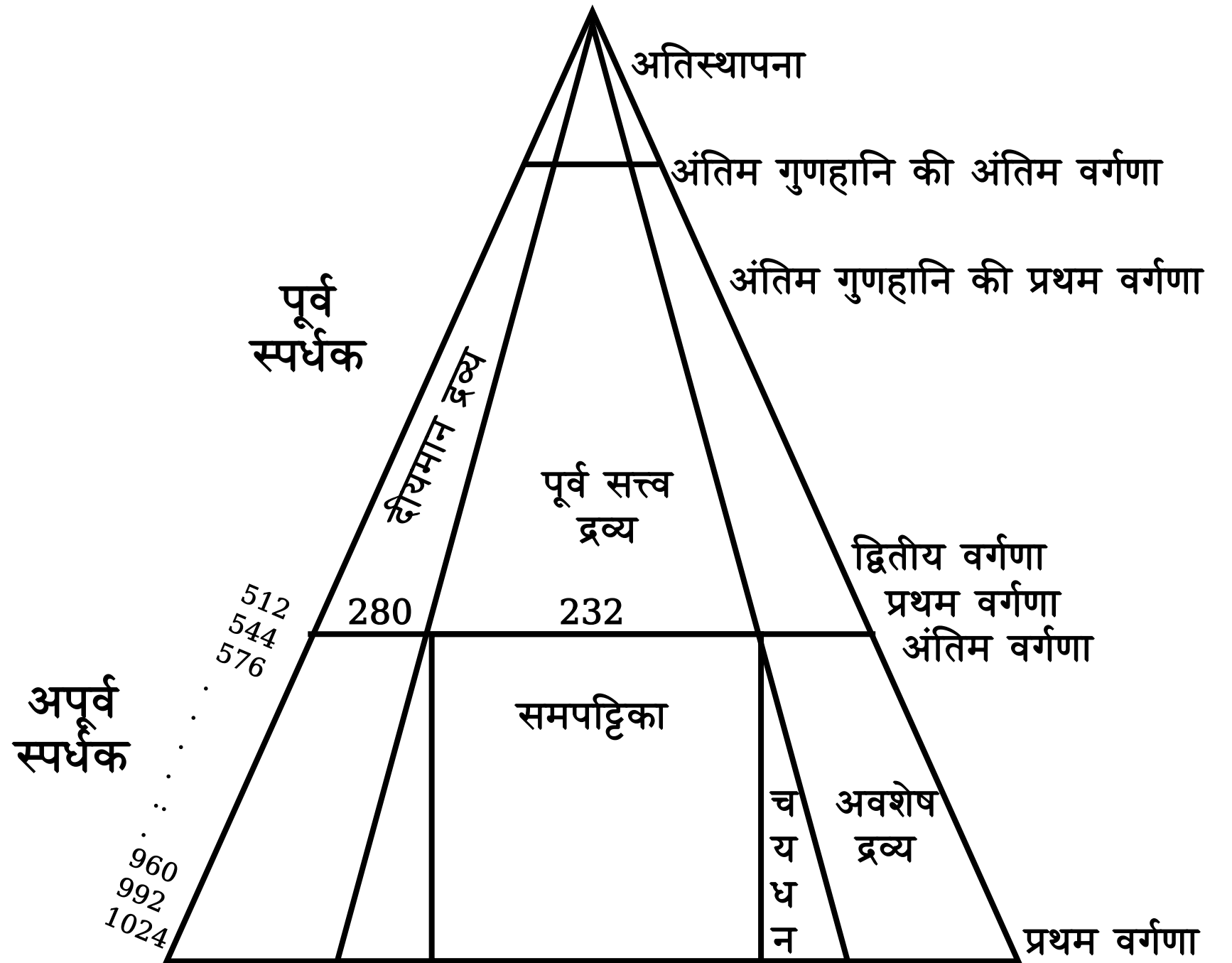
इस प्रकार प्रत्येक गुणहानि में द्रव्य एवं चय आधा-आधा होता जाता है ।

अंतिम गुणहानि की अंतिम वर्गणा

$$\frac{\text{प्रथम गुणहानि की प्रथम वर्गणा}}{2\text{नाना गुण} - 1} = \text{अंतिम गुणहानि की प्रथम वर्गणा}$$


$$\text{प्रथम वर्गणा} - (\text{गुणहानि आयाम} - 1) \times \text{चय} = \text{अंतिम वर्गणा}$$

अपूर्व स्पर्धक और पूर्व स्पर्धकों की रचना



ओक्कट्टिदं तु देदि अपुव्वादिमवग्गणाउ हीणकमं ।
पुव्वादिवग्गणाए, असंखगुणहीणयं तु हीणकमा ॥471॥

- अन्वयार्थः (ओक्कट्टिदं) अपकर्षित द्रव्य को (अपुव्वादिमवग्गणाउ) अपूर्वस्पर्धक की आदिवर्गणा से लेकर (हीणकमं) हीनक्रम से (देदि) देता है
- (तु) परन्तु उसके बाद (पुव्वादिवग्गणाए) पूर्वस्पर्धक की आदिवर्गणा में (असंखगुणहीणयं) असंख्यात गुणा हीन देता है।
- (तु) पुनः उसके बाद (हीणकमा) विशेषहीन क्रम से देता है
॥471॥



पूर्व-अपूर्व स्पर्धकों में अपकर्षित द्रव्य

इस प्रकार अपकर्षित द्रव्य में से अपूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा में सबसे अधिक द्रव्य देता है ।

द्वितीय वर्गणा में चयहीन द्रव्य देता है ।

इस प्रकार अपूर्व स्पर्धकों में अंतिम स्पर्धक की अंतिम वर्गणा तक चयहीन द्रव्य देता है । (चय का प्रमाण समान ही है क्योंकि एक भी गुणहानि यहाँ पूर्ण नहीं हुई है ।)

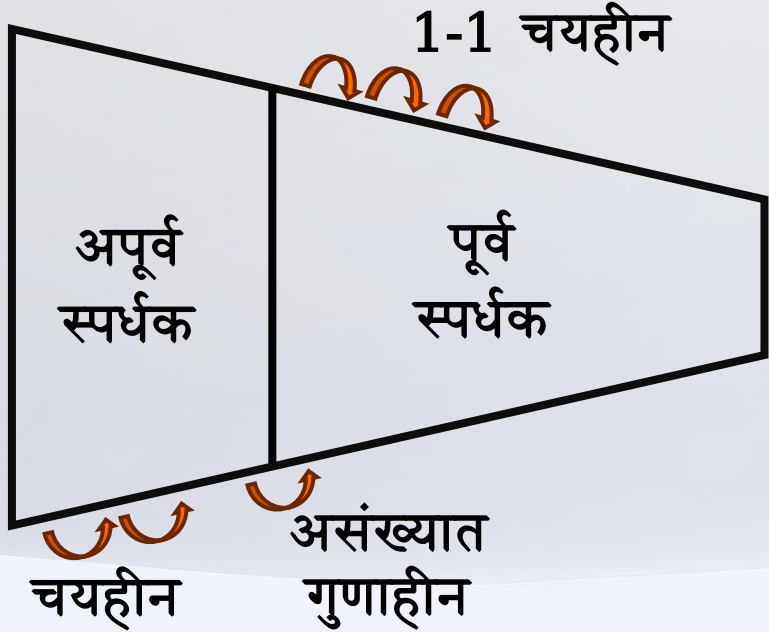
अपूर्व स्पर्धक की अंतिम वर्गणा से पूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा में असंख्यात गुणाहीन द्रव्य देता है ।

पूर्व-अपूर्व स्पर्धकों में अपकर्षित द्रव्य

पूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा में पुराना द्रव्य; आदि वर्गणा का असंख्यात बहुभाग है ।

इसमें देय-द्रव्य मिलाने पर जो द्रव्य दृश्यमान होता है, वह अपूर्व स्पर्धक की अंतिम वर्गणा से एक चयहीन है । क्योंकि यहाँ पूर्व-अपूर्व स्पर्धकों का एक गोपुच्छ हुआ है ।

पूर्व स्पर्धक की द्वितीयादि वर्गणाओं में क्रमशः एक-एक चयहीन द्रव्य दिया जाता है ।

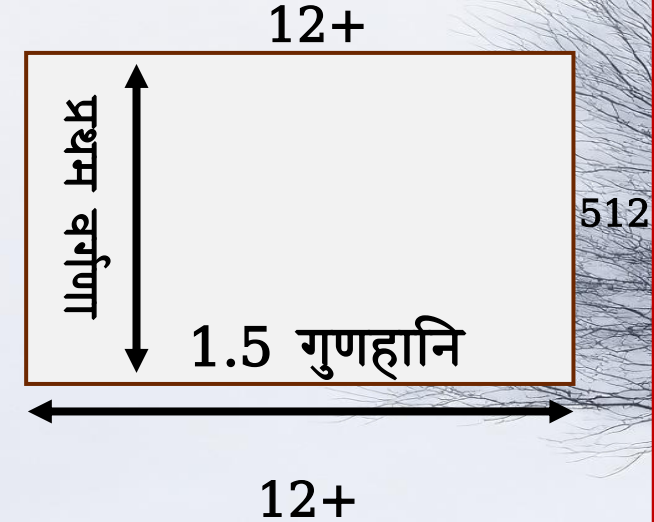


अपूर्व स्पर्धक की अंतिम वर्गणा से पूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा में असंख्यात गुणाहीन द्रव्य दिया जाता है – इसे क्षेत्रविन्यास के द्वारा दिखाते हैं ।

पूर्व स्पर्धकों का समस्त द्रव्य (प्रथम वर्गणा $\times \frac{3}{2}$ गुणहानि) प्रमाण है । इसे ऐसे प्रस्तुत किया जा सकता है –

इस क्षेत्र के विष्कंभ (चौड़ाई) में अपकर्षण-उत्कर्षण भागहार प्रमाण हिस्से करना चाहिए । यहाँ भागहार का प्रमाण 5 माना है, तो उतने हिस्से करते हैं । एक भागप्रमाण अपकृष्ट द्रव्य का प्रमाण होता है ।

क्षेत्रविन्यास द्वारा स्पष्टीकरण



1	
2	
3	
4	
5	एक भाग प्रमाण अपकर्षित द्रव्य

प्रथम वर्गणा

अपकृष्ट द्रव्य के खंड

इस अपकर्षित द्रव्य के अपूर्वस्पर्धक के आयाम प्रमाण से खंड कीजिये ।

$$\text{अपूर्व स्पर्धक का आयाम} = \frac{L}{\text{ओ } \theta}$$

$\frac{L}{\text{ओ } \theta}$ का 1 खंड है, तो $\frac{L}{2}$ आयाम में कितने खंड होंगे ?

$$\frac{1}{\frac{L}{\text{ओ } \theta}} \times L \times 1.5 = \text{ओ } \theta \times 1.5 \text{ अर्थात् ओ } \theta \times 1.5 \text{ प्रमाण खंड होंगे ।}$$

यहाँ ओ = 5, $\theta = \frac{8}{5}$ माना है, तो $5 \times \frac{8}{5} \times 1.5 = 12$ खंड किये जायेंगे । प्रत्येक का आयाम अपूर्व स्पर्धक के आयाम बराबर होगा ।

1.5 गुणहानि

एक
फाली

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----

अब इनमें से (अपकर्षण-उत्कर्षण भागहार – 1) प्रमाण खंड ग्रहण करके पूर्व स्पर्धकों के नीचे जोड़ने पर पूर्वस्पर्धक की आदि वर्गणा प्रमाण सारे अपूर्वस्पर्धक दिखाई देते हैं ।

1	
2	
3	
4	

अपूर्व
स्पर्धक

पूर्व स्पर्धक

इन अपूर्व स्पर्धकों में प्रत्येक वर्गणा का द्रव्य समान है । इनमें चयों को देना शेष है; जिससे द्रव्य का एक गोपुच्छाकार हो जाये ।

जो शेष द्रव्य दिया जाएगा, उसमें चय द्रव्य का यथायोग्य विभाजन कर लेना चाहिए ।

अब जो अपकर्षित द्रव्य में शेष खंड बचे हैं, उन्हें पूर्व-अपूर्व स्पर्धकों में देना चाहिए ।

शेष
खंड

5	6	7	8	9	10	11	12
---	---	---	---	---	----	----	----

एक फालि प्रमाण द्रव्य के (ओ $\theta \times 1.5$) प्रमाण खंड किये थे । उनमें से (ओ-1) प्रमाण खंड अपूर्व स्पर्धक हेतु दिये । शेष बहुभाग प्रमाण खंड शेष हैं ।

अंक संदृष्टि में 12 खंड में से $(5-1) = 4$ खंड अपूर्व स्पर्धक हेतु दिये हैं । $12 - 4 = 8$ खंड शेष हैं ।

अब प्रत्येक खंड को पूर्व-अपूर्व स्पर्धकों में देना है । पूर्व स्पर्धकों के आयाम को अपूर्व स्पर्धकों के आयाम से करने पर (ओ $\theta \times 1.5$) प्राप्त हुआ था । इसमें एक अपूर्व स्पर्धक का आयाम और मिला देने पर कुल शलाकाओं का प्रमाण आ जाता है ।

अंक संदृष्टि में पूर्व स्पर्धक के आयाम के खंड = 12, अपूर्व स्पर्धक का आयाम = 1 तो कुल शलाका $12 + 1 = 13$ हुई ।

अब प्रत्येक खंड के कुल शलाका प्रमाण खंड करके, एक-एक खंड प्रत्येक शलाका में दिया जाएगा ।

इस प्रकार पूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा में दिया हुआ द्रव्य कुछ कम एक सकल खंड प्रमाण है । क्योंकि यहाँ 8 विकलखंड प्राप्त हुए हैं ।

यदि अपकर्षण-उत्कर्षण भागहार प्रमाण खंड और मिलते, तो संपूर्ण एक सकल खंड प्राप्त होता । क्योंकि एक सकल खंड के 13 विकलखंड किये हैं । ऐसे 8 विकलखंड पूर्व स्पर्धकों को प्राप्त हुए हैं ।

यदि 5 विकलखंड और प्राप्त होते, तो संपूर्ण खंड हो जाता । परंतु यहाँ उतना द्रव्य हीन है ।

इस प्रकार पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा में दिया द्रव्य कुछ कम एक सकल खंड प्रमाण है । जबकि अपूर्व स्पर्धक की अंतिम वर्गणा में $(\text{अपकर्षण-उत्कर्षण भागहार} - 1) \times \text{सकल खंड प्रमाण द्रव्य एवं कुछ अधिक द्रव्य दिया गया है ।}$

इससे सिद्ध हुआ कि अंतिम वर्गणा से पूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा में असंख्यात गुणा हीन द्रव्य दिया जाता है ।

यहाँ गुणकार का प्रमाण साधिक 'ओ' है ।

कोहादीणमपुव्वं, जेटुं सरिसं तु अवरमसरित्थं ।
लोहादिआदिवग्गण-अविभागा होंति अहियकमा ॥472॥

- अन्वयार्थः (कोहादीणमपुव्वं) क्रोधादि चार कषायों के अपूर्व स्पर्धकों की (जेटुं) उत्कृष्ट वर्गणा (अंतिम स्पर्धक की आदिवर्गणा) (सरिसं) सदृश है ।
- (तु) परन्तु (अवरं) जघन्य वर्गणा (प्रथम स्पर्धक की आदि वर्गणा) (असरित्थं) सदृश नहीं है अर्थात् विसदृश है।
- (लोहादिआदिवग्गणअविभागा) लोभादिकों की आदि वर्गणा के अविभागप्रतिच्छेद (अहियकमा) क्रम से अधिक (होंति) हैं

॥472॥

4 कषायों के अपूर्व स्पर्धकों के अविभागप्रतिच्छेद

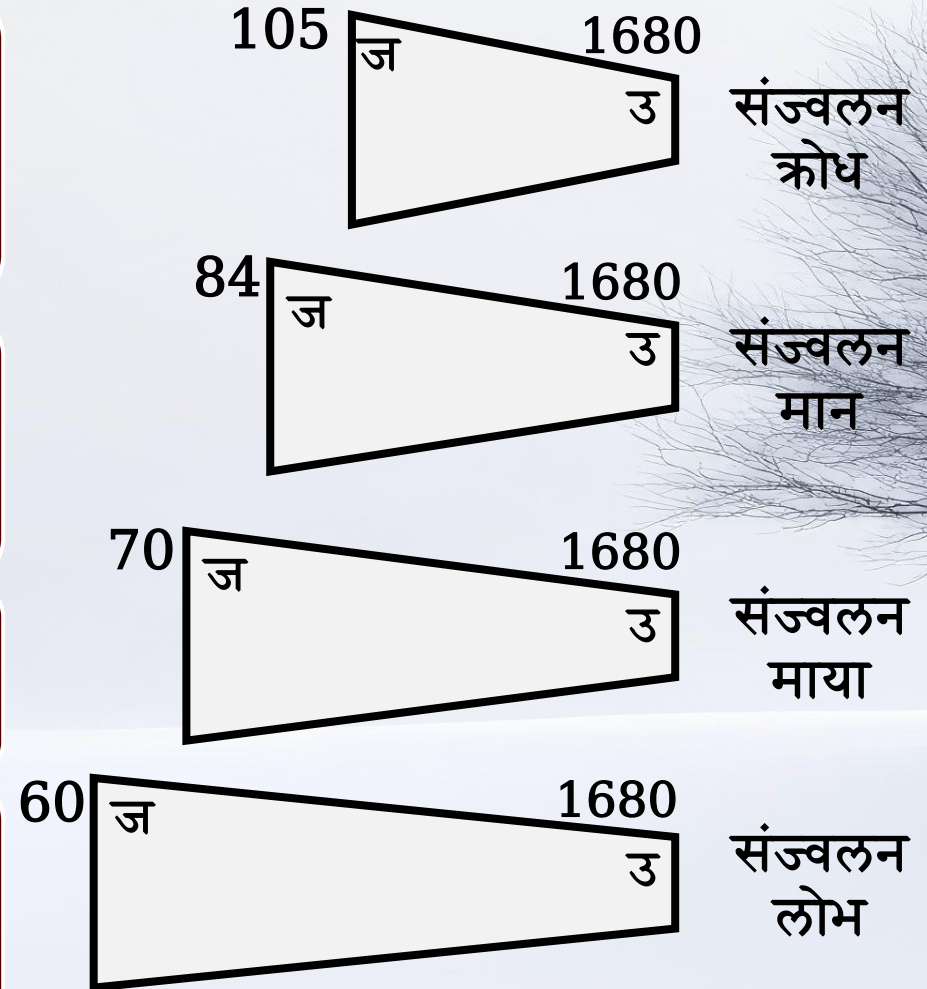
चूंकि 4 कषायों के अपूर्व स्पर्धकों की संख्या समान नहीं है, अतः उनकी जघन्य शक्ति समान नहीं है; परंतु उत्कृष्ट शक्ति सबकी समान है।

अपूर्व स्पर्धक की अंतिम स्पर्धक की आदि वर्गणा की शक्ति सबकी समान है।

परंतु प्रथम स्पर्धक की आदि वर्गणा की शक्ति भिन्न-भिन्न है।

लोभ की जघन्य शक्ति सबसे अल्प है, उससे अनंत भाग अधिक क्रमशः माया, मान, क्रोध की है।

4 कषायों के अपूर्व स्पर्धक



सगसगफडुयएहिं, सगजेदु भाजिदे सर्गीआदि ।
मज्झेवि अणंताओ, वग्गणगाओ समाणाओ ॥473॥

- अन्वयार्थः (सगजेदु) अपने-अपने उत्कृष्ट स्पर्धक में (उत्कृष्ट स्पर्धक की आदि वर्गणा में) (सगसगफडुयएहिं) अपनी-अपनी स्पर्धक संख्या से (भाजिदे) भाग देने पर (सर्गीआदि) अपनी-अपनी प्रथम वर्गणा आती है।
- (मज्झेवि) मध्य में भी (अणंताओ वग्गणगाओ) अनन्त वर्गणाएँ (समाणाओ) समान हैं ॥473॥

प्रथम वर्गणा की शक्ति

अपनी-अपनी स्पर्धक शलाका का भाग अपने-अपने उत्कृष्ट स्पर्धक में देने से जघन्य स्पर्धक की प्रथम वर्गणा की शक्ति का प्रमाण आता है ।

क्योंकि जघन्य स्पर्धक की प्रथम वर्गणा $\times N = N^{\text{th}}$ स्पर्धक की आदि वर्गणा

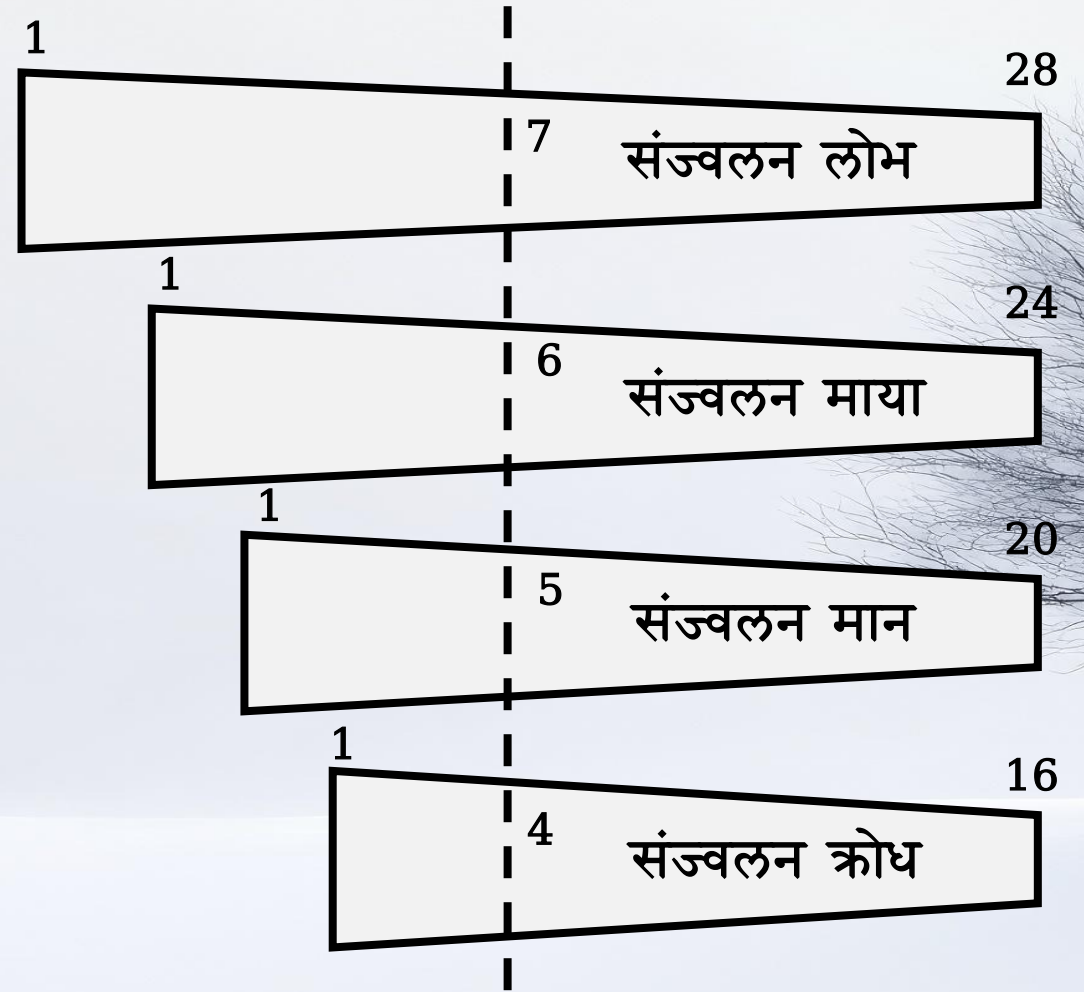
याने जघन्य स्पर्धक की प्रथम वर्गणा \times अपूर्व स्पर्धक संख्या = अंतिम अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा

अतः जघन्य स्पर्धक की प्रथम वर्गणा = $\frac{\text{अंतिम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा}}{\text{अपूर्व स्पर्धक संख्या}}$

“अपूर्व स्पर्धकों की संदृष्टि”

“मध्य के स्पर्धकों की समानता”

मानाकि	क्रोध	मान	माया	लोभ
अंतिम स्पर्धक की आदि वर्गणा	1680	1680	1680	1680
स्पर्धक संख्या	16	20	24	28
प्रथम स्पर्धक की आदि वर्गणा	$\frac{1680}{16} = 105$	$\frac{1680}{20} = 84$	$\frac{1680}{24} = 70$	$\frac{1680}{28} = 60$



मध्य में अनंत स्पर्धक समान भी होते हैं

जे हीणा अवहारे, रूवा तेहि गुणित्तु पुव्वफलं ।
हीणवहारेण हिये, लद्धं पुव्वफलेणहियं ॥474॥

- अन्वयार्थः (अवहारे) भागहार में (जे हीणा रूवा) जितनी न्यून संख्या है (तेहिं) उससे (पुव्वफलं गुणित्तु) पूर्वलब्ध को गुणा करके उतने ही (हीणवहारेण) न्यून भागहार से (हिये) भाग देने पर (लद्धं) जो लब्ध आता है वह (पुव्वफलेणहियं) पूर्व लब्ध में अधिक करने पर नवीन लब्ध आता है ॥474॥

गणित सूत्र

किसी संख्या को बड़ी संख्या से भाग देने पर और पुनः उसी संख्या को छोटी संख्या से भाग देने पर कितना उत्तर आता है – यह इस सूत्र द्वारा बताया है ।

उदाहरण: $\frac{36}{12} = 3$, $\frac{36}{9} = 3 + ?$

सूत्र = पूर्व लब्ध + $\frac{\text{पूर्व लब्ध} \times \text{न्यून संख्या}}{\text{नवीन भागहार}}$

$3 + \frac{3 \times (12 - 9)}{9} = 3 + \frac{3 \times 3}{9} = 3 + \frac{9}{9} = 3 + 1 = 4$ नवीन लब्ध

कोहदुसेसेणवहिदकोहे तक्कंडयं तु माणतिए । रूपहियं सगकंडय-हिदकोहादी समाणसला ॥475॥

- अन्वयार्थः (कोहदुसेसेण) क्रोधादिक अवशेष अर्थात् क्रोध के स्पर्धकों के प्रमाण को मान के स्पर्धकों के प्रमाण में से कम करने पर जो शेष रहता है। उसे (अवहिदकोहे) क्रोध के अपूर्व स्पर्धकों की संख्या में भाग देने पर (तक्कंडयं) क्रोध के काण्डक का प्रमाण आता है।
- (तु) और (माणतिए) मानत्रिक में कांडक का प्रमाण (रूपहियं) एक-एक अधिक है।
- (सगकंडयहिदकोहादी) अपने-अपने कांडक से अपनी-अपनी स्पर्धक संख्या को भाग देने पर क्रोधादिकों की (समाणसला) समान शलाका प्राप्त होती है ॥475॥

मध्य में कौन-से स्पर्धक समान होते हैं - यह इस गाथा द्वारा बताया जा रहा है ।

$$\frac{\text{क्रोध स्पर्धक संख्या}}{\text{मान स्पर्धक} - \text{क्रोध स्पर्धक}} = \text{क्रोध कांडक}$$

$$\frac{16}{20-16} = \frac{16}{4} = 4$$

मान कांडक

माया कांडक

लोभ कांडक

$$\frac{\text{मान स्पर्धक}}{\text{माया स्पर्धक} - \text{मान स्पर्धक}} = \frac{20}{24-20} = 5$$

$$\frac{\text{माया स्पर्धक}}{\text{लोभ स्पर्धक} - \text{माया स्पर्धक}} = \frac{24}{28-24} = 6$$

$$\frac{\text{लोभ स्पर्धक}}{\text{शेष प्रमाण}} = \frac{28}{4} = 7$$

अर्थात् क्रोधकांडक के प्रमाण से मानादिकांडक का प्रमाण क्रमशः 1-1 अधिक है ।

इस कांडक प्रमाण आयाम ऊपर जाने पर उस स्पर्धक की चारों कषायों की आदि वर्गणा समान होती है ।

	क्रोध	मान	माया	लोभ
कांडक का प्रमाण	4	5	6	7
प्रथम सदृश स्पर्धक	जघन्य स्पर्धक × कांडक $105 \times 4 = 420$	$84 \times 5 = 420$	$70 \times 6 = 420$	$60 \times 7 = 420$
द्वितीय सदृश स्पर्धक	जघन्य स्पर्धक × कांडक × 2 $105 \times 4 \times 2 = 840$	$84 \times 5 \times 2 = 840$	$70 \times 6 \times 2 = 840$	$60 \times 7 \times 2 = 840$

इस प्रकार कांडक प्रमाण आयाम ऊपर जाने पर सदृश-सदृश वर्गणा प्राप्त होती है ।

ऐसे कितने
स्पर्धक सदृश
प्राप्त होते हैं ?

$\frac{\text{स्पर्धक शलाका}}{\text{अपना-अपना कांडक}}$ प्रमाण सदृश स्पर्धक होते हैं।

क्रोध	मान	माया	लोभ
$\frac{16}{4}$	$\frac{20}{5}$	$\frac{24}{6}$	$\frac{28}{7}$

याने अंक सदृष्टि में 4 स्पर्धकों की आदि वर्गणा समान होती है ।

अर्थ सदृष्टि में अनंत अपूर्व स्पर्धकों की आदि वर्गणा सदृश होती है । क्योंकि अपूर्व स्पर्धकों की संख्या अनंत है ।

अपूर्व स्पर्धक की अंतिम वर्गणा = $\frac{\text{जघन्य पूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा}}{\text{अनंत}}$; $\frac{व}{ख}$

अपूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा = $\frac{\text{अपूर्व स्पर्धक अंतिम वर्गणा}}{\text{अपूर्व स्पर्धक संख्या}}$; $\frac{व}{ख \times \text{ओ } a}$

संक्षेप में
संदृष्टि = ज

क्रोधकांडक = ख, मानकांडक = ख+1, मायाकांडक = ख+2, लोभकांडक = ख+3

इतने-इतने अपूर्व स्पर्धक जाने पर सदृश स्पर्धक आता है ।

वर्गणाओं
की
सदृशता
की अर्थ
सदृष्टि

क्रोध	मान	माया	लोभ
व/ख	व/ख	व/ख	व/ख
ज × ख × 2	ज × (ख + 1) × 2	ज × (ख + 2) × 2	ज × (ख + 3) × 2
ज × ख	ज × (ख + 1)	ज × (ख + 2)	ज × (ख + 3)
ज	ज	ज	ज

ताहे दव्ववहारो, पदेसगुणहाणिफड्डुयवहारो।
पल्लस्स पढममूलं, असंखगुणिदक्कमा होंति ॥476॥

- अन्वयार्थः (ताहे) उस समय अर्थात् अश्वकर्णकरण के प्रथम समय में (दव्ववहारो) द्रव्य का भागहार (पदेसगुणहाणिफड्डुयवहारो) प्रदेशगुणहानि स्पर्धकों का भागहार और (पल्लस्स पढममूलं) पल्य का प्रथम वर्गमूल – ये तीनों (असंखगुणिदक्कमा) क्रम से असंख्यात गुणित (होंति) हैं ॥476॥

अश्वकर्णकरण के प्रथम समय अल्प-बहुत्व


पद	अल्प-बहुत्व	प्रमाण	संदृष्टि
द्रव्य का भागहार	स्तोक	$\frac{प}{००}$	ओ
प्रदेश गुणहानि स्पर्धक भागहार	असंख्यात गुणा	$\frac{प}{०}$	ओ ०
पल्य का प्रथम वर्गमूल	असंख्यात गुणा	$\sqrt{प}$	$\sqrt{प}$

द्रव्य का अवहार (भागहार)

- अश्वकर्णकरण के प्रथम समय में अपूर्वस्पर्धकों की रचना के लिए द्रव्य ग्रहण करने के लिए जिस भागहार का प्रयोग किया जाता है, उसे द्रव्य भागहार कहते हैं । (संदृष्टि : ओ)

ताहे अपुव्वफड्डुय-पुव्वस्सादीदणंतिममुदेदि ।
बंधो हु लताणंतिम-भागोत्ति अपुव्वफड्डुयादो ॥477॥

- अन्वयार्थः (ताहे) उस अश्वकर्णकरण के प्रथम समय में (अपुव्वफड्डुय पुव्वस्सादीदणंतिममुदेदि) सर्व अपूर्वस्पर्धक और पूर्वस्पर्धक के आदि से लेकर अनन्तवें भाग स्पर्धक उदय में आते हैं।
- उसी प्रकार (अपुव्वफड्डुयादो) अपूर्वस्पर्धक से (लताणंतिम-भागोत्ति) पूर्वस्पर्धक के लता के अनन्तवें भाग तक (बंधो) बंध होता है ॥477॥



अपूर्व- पूर्व स्पर्धकों का उदय

अश्वकर्ण के प्रथम समय में अपूर्व स्पर्धकों की उदीरणा करके प्रथम स्थिति में देता है । इससे (शक्ति अपेक्षा) सारे अपूर्व स्पर्धकों का उदय प्रारंभ हो जाता है । प्रदेश अपेक्षा तो सत्त्व के असंख्यातवें भाग की ही उदीरणा होती है । शेष सत्त्व-द्रव्य अनुदीर्ण रहता है ।

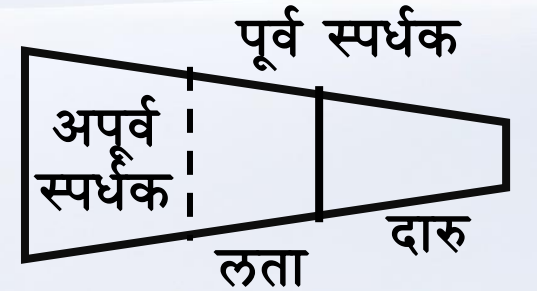
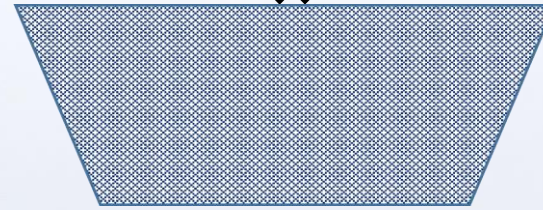
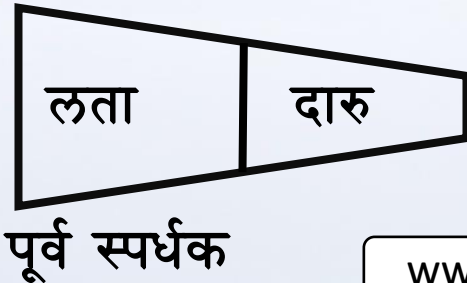
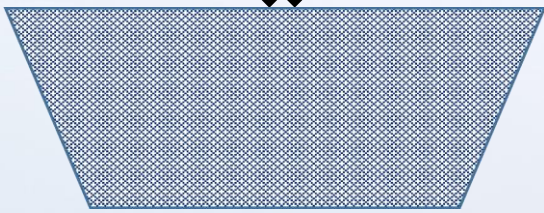
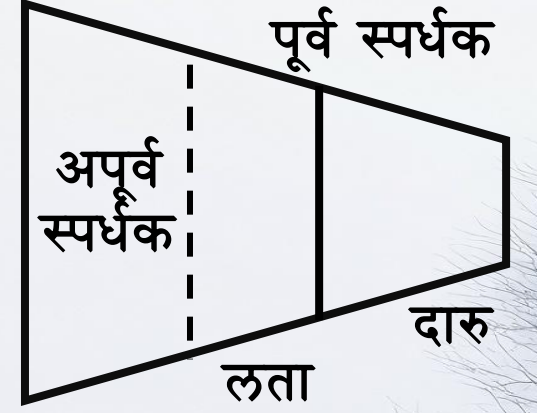
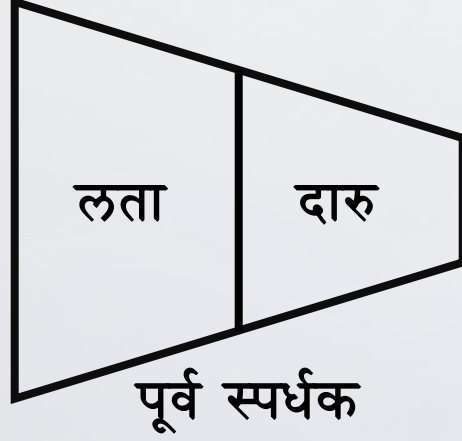
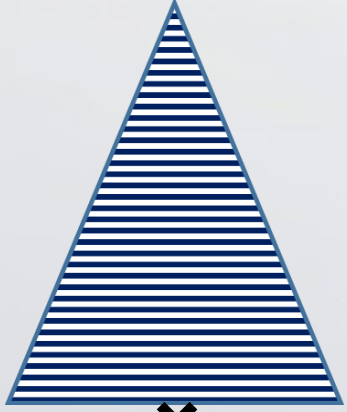
पूर्व स्पर्धक प्रथम स्थिति में हैं ही । इनके जघन्य स्पर्धक से लता के अनंतवें भाग तक का उदय है एवं उदीरणा भी है ।

पूर्व स्पर्धक के शेष लता के अनंत बहुभाग एवं दारु के पूर्ण अनुभाग का उदय नहीं आता, ना ही उदीरणा होती है ।

ध्यान रहे प्रथम स्थिति में द्विस्थानीय सत्त्व है क्योंकि उदीरणा तो सत्त्व से चालू है । लेकिन उनका उदय नहीं आता । वे प्रतिसमय एक-स्थानीय में परिवर्तित होकर उदित होते हैं ।

अश्वकर्ण के पहले

अश्वकर्ण के प्रथम समय से



संज्वलन क्रोध

पूर्व स्पर्धक

संज्वलन क्रोध

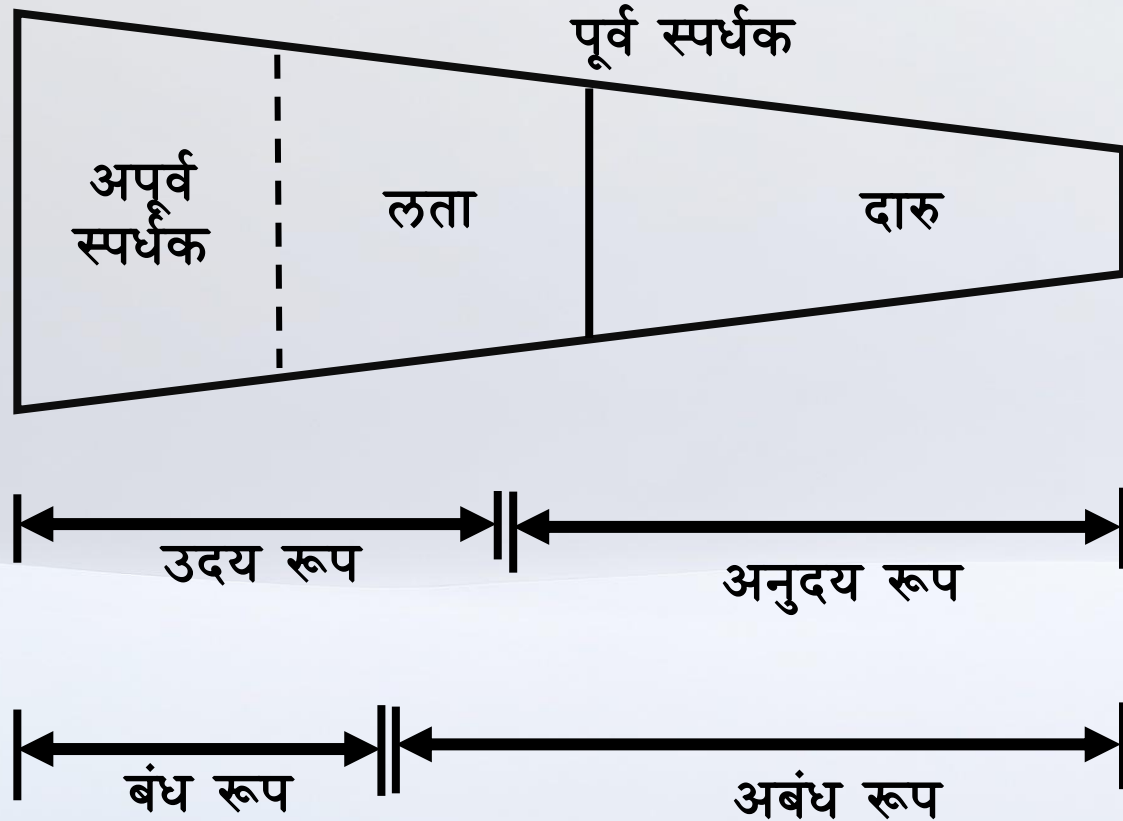
लता

दारु

अपूर्व-पूर्व स्पर्धकों का बंध



जितना पूर्व स्पर्धक का उदय होता है, उससे अनंत गुणाहीन पूर्व स्पर्धक का बंध होता है। अपूर्व स्पर्धक का बंध भी होता है।



अंक संदृष्टि - अपूर्व स्पर्धक = 8,
लतारूप पूर्व स्पर्धक = 256, अनंत = 4

लता का अनंतवां भाग = $\frac{256}{4} = 64$

इसका भी अनंतवां भाग = $\frac{64}{4} = 16$

विदियादिसु समयेसु वि, पढमं व अपुव्वफड्डयाण विही ।
णवरि असंखगुणूणं, णिव्वत्तयदि पडिसमयं ॥478॥

- अन्वयार्थः अश्वकर्णकरण के (विदियादिसु समयेसु वि) द्वितीयादि समयों में भी (अपुव्वफड्डयाण विही) अपूर्वस्पर्धकों की विधि (पढमं व) प्रथम समय के समान ही जानना।
- (णवरि) विशेष यह है कि (पडिसमयं) प्रत्येक समय में (असंखगुणूणं) असंख्यातगुणा कम अपूर्वस्पर्धकों की (णिव्वत्तयदि) रचना करता है ॥478॥

अश्वकर्ण का द्वितीय समय

जो स्थितिकांडक, अनुभागकांडक, स्थितिबंधापसरण प्रथम समय में प्रवृत्त हो रहे थे, वे द्वितीयादि समयों में भी प्रवृत्त रहे हैं क्योंकि अंतर्मुहूर्त पूर्ण नहीं हुआ है ।

प्रथम समय के अनुभागबंध से द्वितीय समय में अनुभागबंध अनंतगुणा हीन होता है क्योंकि प्रत्येक समय में अनंतगुणा विशुद्धि बढ़ती है ।

विशुद्धि बढ़ने से प्रत्येक समय असंख्यात गुणे प्रदेशों का अपकर्षण कर गुणश्रेणि की रचना की जाती है ।

प्रथम समय में जितने अपूर्व स्पर्धक रचे थे, उससे असंख्यात गुणाहीन नवीन अपूर्व स्पर्धक, पहले के जघन्य अपूर्व स्पर्धक के नीचे बनाये जाते हैं ।

प्रथम समय में बनाये अपूर्व स्पर्धकों में भी द्रव्य दिया जाता है ।

णवफड्डुयाण करणं, पडिसमयं एवमेव णवरिं तु ।
दव्वमसंखेज्जगुणं, फड्डुयमाणं असंखगुणहीणं ॥479॥

- अन्वयार्थः (एवमेव) इसी प्रकार (पडिसमयं) प्रत्येक समय में (णवफड्डुयाण करणं) नवीन स्पर्धकों की रचना होती है।
- (तु) परन्तु (णवरि) विशेषता यह है कि प्रत्येक समय में (दव्वमसंखेज्जगुणं) द्रव्य असंख्यातगुणा ग्रहण करता है और (फड्डुयमाणं) नवीन स्पर्धकों का प्रमाण (असंखगुणहीणं) असंख्यातगुणा हीन होता जाता है ॥479॥

अश्वकर्ण में प्रत्येक समय

इस प्रकार अश्वकर्ण के प्रत्येक समय में नवीन अपूर्व स्पर्धक रचता है । विशेषता –

1) पूर्व समय के अपूर्व स्पर्धकों से तात्कालिक अपूर्व स्पर्धक असंख्यात गुणाहीन बनाता है ।

$$\frac{\text{पूर्व समयकृत अपूर्व स्पर्धक}}{\sqrt{\text{प/असं}}} = \text{तात्कालिक समय में नवीन अपूर्व स्पर्धक}$$

2) पूर्व समय के अपकर्षित द्रव्य से तात्कालिक अपकर्षित द्रव्य असंख्यात गुणा ग्रहण करता है ।

3) द्वितीयादि समयों में पूर्व-अपूर्व – दोनों स्पर्धकों में से द्रव्य का अपकर्षण कर नवीन अपूर्व स्पर्धकों की रचना होती है ।

4) द्रव्य का विभाग पूर्ववत् समपट्टिका, चयधन, शेषद्रव्य आदि करता है । यह सब करके प्रत्येक समय में पूर्व-अपूर्व स्पर्धकों का एक गोपुच्छाकार रहता है ।

इस प्रकार यह सब प्रक्रिया अपूर्वस्पर्धककरण के अंतिम समय तक जानना चाहिए ।

पठमादिसु दिज्जकमं, तक्कालजफड्डयाण चरिमो त्ति ।
हीणकमं से काले, असंखगुणहीणयं तु हीणकमं ॥480॥

- अन्वयार्थः (से काले) उस काल में अर्थात् अपूर्वस्पर्धककरण काल के प्रथमादि समयों में (तक्कालजफड्डयाण) उस काल में रचे गये अपूर्व स्पर्धकों की (पठमादिसु) प्रथमादि वर्गणा से लेकर (चरिमो त्ति) अंतिम वर्गणा तक (दिज्जकमं) देने का क्रम (हीणकमं) हीनक्रम से है।
- उसके अनन्तर पूर्व समय में रचे हुए अपूर्व स्पर्धक की आदिवर्गणा में (असंखगुणहीणयं) असंख्यातगुणित हीन द्रव्य दिया जाता है।
- उसके अनन्तर द्वितीयादि वर्गणाओं में (हीणकमं) चयहीन क्रम से द्रव्य दिया जाता है ॥480॥

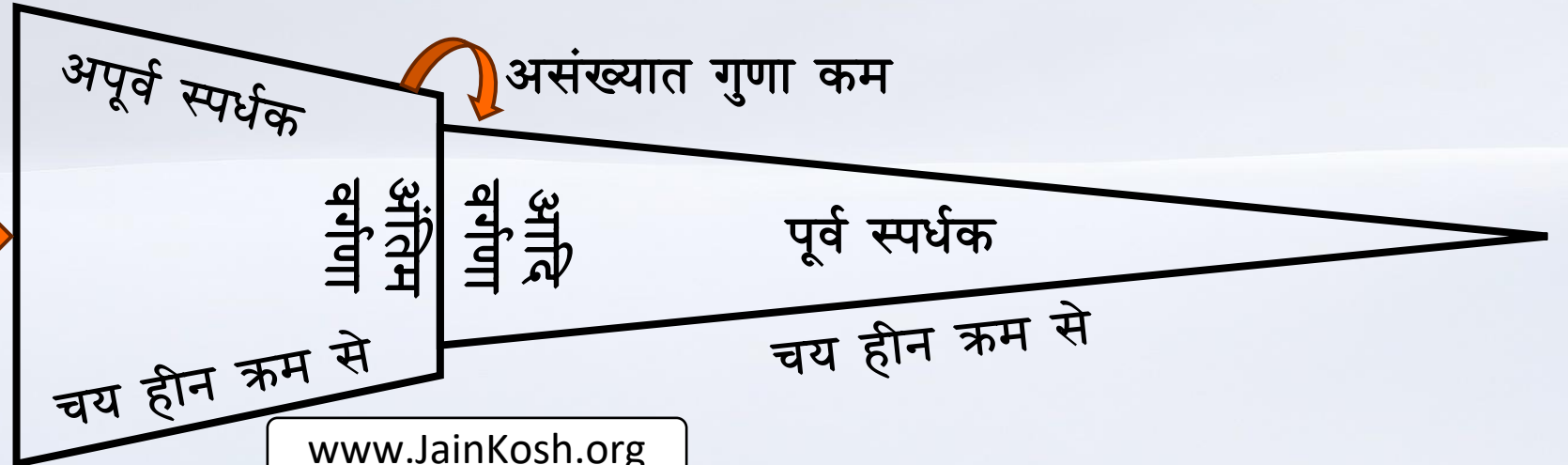
अपकर्षित द्रव्य का देय क्रम

अपकर्षित द्रव्य जिस
क्रम से दिया जाता
है, उसे देयक्रम
कहते हैं।

अपूर्व स्पर्धक
करण के प्रथम
समय देयक्रम

अश्वकर्ण के प्रथम समय में:

- अपूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा में सर्वाधिक द्रव्य देता है।
- द्वितीयादि से अंतिम अपूर्व स्पर्धक की अंतिम वर्गणा तक चयहीन द्रव्य देता है।
- अंतिम वर्गणा से पूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा में असंख्यात गुणाहीन द्रव्य देता है।
- इसके आगे अंतिम वर्गणा तक चयहीन क्रम से द्रव्य देता है।



अश्वकर्ण के द्वितीयादि समयों में

नवीन अपूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा में अधिक द्रव्य देता है ।

इससे आगे नवीन अपूर्व स्पर्धकों की अंतिम वर्गणा तक चयहीन द्रव्य देता है ।

इससे आगे पूर्व समय में रचित अपूर्वस्पर्धकों की आदि वर्गणा में असंख्यातगुणाहीन द्रव्य देता है ।

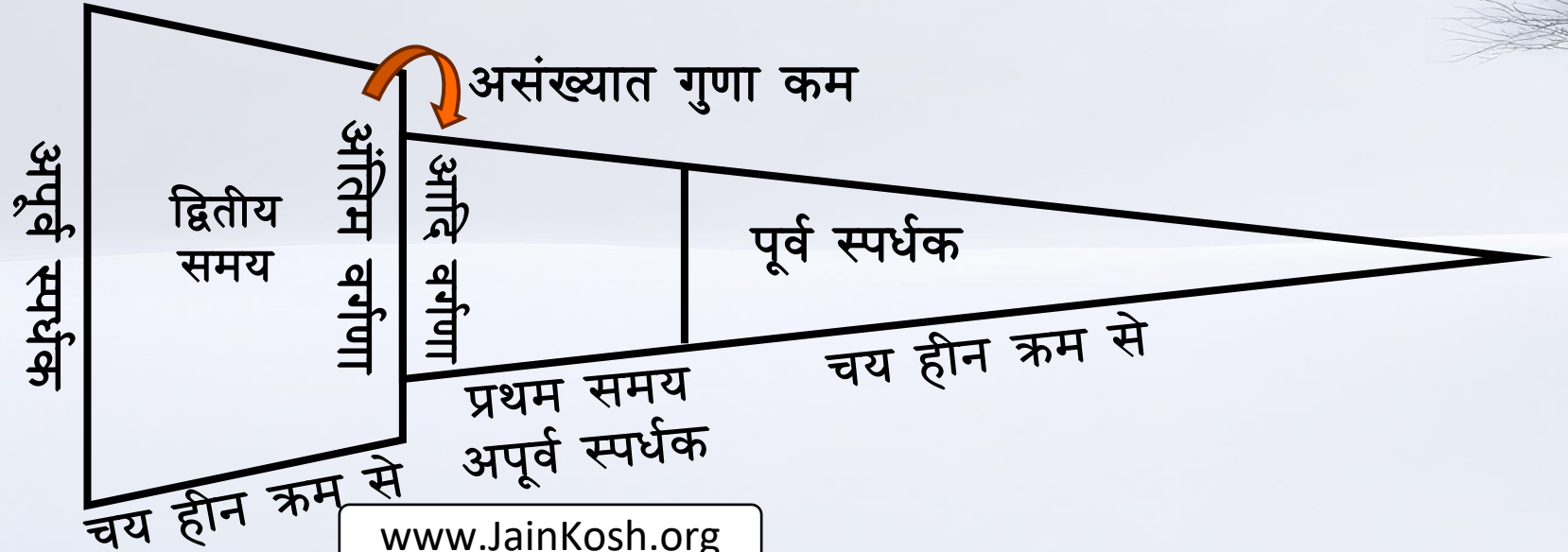
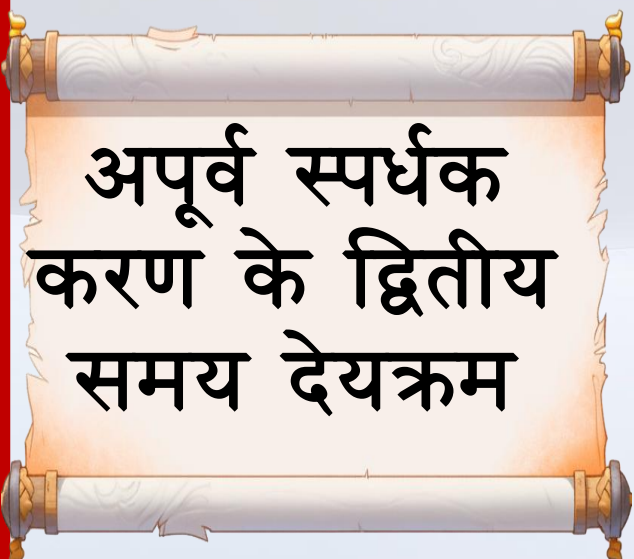
इसके आगे पूर्व स्पर्धक की अंतिम वर्गणा तक चयहीन क्रम से द्रव्य देता है ।

इसी प्रकार तृतीयादि प्रत्येक समय में जानना चाहिए ।

नियम

जहाँ नवीन स्पर्धक रचने हैं, वहाँ द्रव्य पूर्व से नहीं होने के कारण अधिक द्रव्य दिया जाता है ।

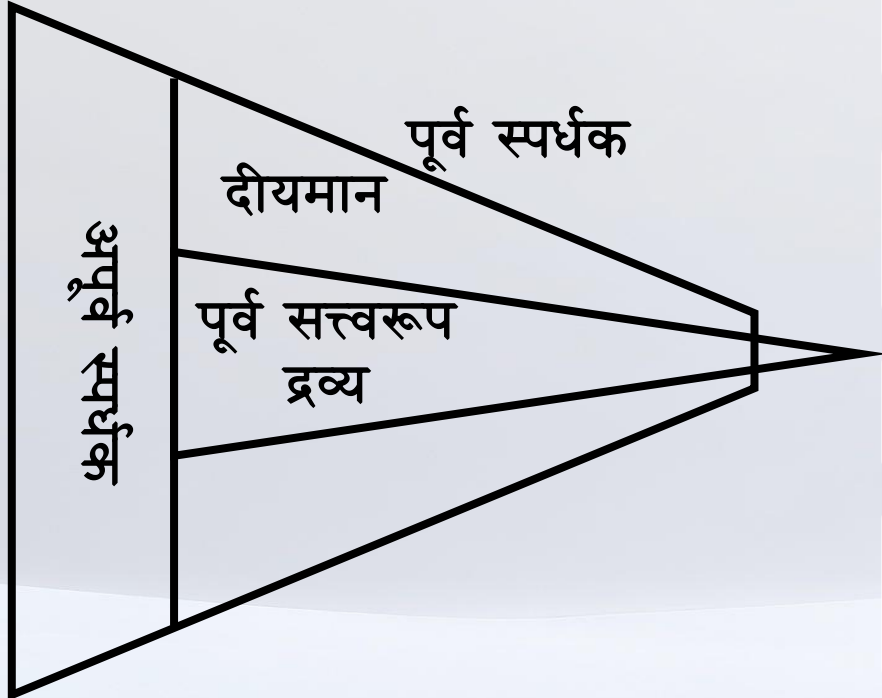
जहाँ नवीन स्पर्धक एवं पूर्व सत्त्व की संधि होती है, वहाँ असंख्यात गुणाहीन द्रव्य दिया जाता है ।



पठमादिसु दिस्सकमं, तक्कालजफड्डयाण चरिमोत्ति ।
हीणकमं से काले, हीणं हीणं कमं तत्तो ॥481॥

- अन्वयार्थः (से काले) उस काल में (तक्कालजफड्डयाण) उस काल में रचे हुए अपूर्व स्पर्धकों की (पठमादिसु चरिमोत्ति) प्रथमादि वर्गणा से चरम वर्गणा तक (दिस्सकमं) दृश्यक्रम (हीणकमं) हीन क्रम से है।
- (तत्तो) उसके अनन्तर अपूर्व-पूर्व स्पर्धकों में (हीणं हीणं कमं) हीन-हीन दृश्यक्रम है ॥481॥

अपकर्षित द्रव्य का दृश्य क्रम



पूर्वापूर्व स्पर्धकों
का दृश्यक्रम

अपूर्वस्पर्धक करणकाल के प्रथमादि समयों में पूर्व-सत्त्वरूप द्रव्य और दिया हुआ द्रव्य मिलकर जो द्रव्य का क्रम दिखता है, उसे दृश्यक्रम कहते हैं ।

विवक्षित समय में रचे हुए अपूर्व-स्पर्धकों का जो देयक्रम है, वही दृश्यक्रम है क्योंकि उस समय में अपकर्षित द्रव्य से ही उसकी रचना हुई है ।

यह क्रम प्रथम वर्गणा से अंतिम वर्गणा तक चयहीन क्रम से व्यवस्थित है ।

उससे ऊपर की वर्गणा का दृश्यक्रम एक चय कम है ।

इसके ऊपर पूर्व स्पर्धकों की अंतिम वर्गणा तक दृश्यक्रम एक चयहीन है ।

इस प्रकार विवक्षित समय में अपूर्वस्पर्धकों की प्रथम वर्गणा से पूर्व स्पर्धकों की अंतिम वर्गणा तक एक गोपुच्छ रहता है ।

पढमाणुभागखंडे, पडिदे अणुभागसंतकम्मं तु ।
लोभादणंतगुणिदं, उवरिं वि अणंतगुणिदकमं ॥482॥

- अन्वयार्थः (पढमाणुभागखंडे पडिदे) प्रथम अनुभागकांडक का पतन होने पर (अणुभाग संतकम्मं तु) अनुभाग सत्कर्म (लोभादणंतगुणिदं) लोभ से अनन्तगुणा होता है।
- (उवरिं पि) ऊपर भी (अणंतगुणिदकमं) अनन्तगुणित क्रम जानना चाहिए ॥482॥

प्रथम अनुभागकांडक का पतन

इस प्रकार अश्वकर्णकरण के प्रत्येक समय में अपूर्वस्पर्धकों की रचना होती है ।

प्रथम अनुभागकांडक का पतन होने के पहले तक स्थितिकांडक, स्थितिबंध, अनुभागकांडक और अनुभागसत्त्व समान होता है ।

यहाँ अनुभाग सत्त्व पूर्ववत् लोभ का सर्वाधिक, माया का कुछ कम, क्रोध का कम और मान का सबसे कम - इस प्रकार चल रहा है ।

प्रथम अनुभागकांडक का पतन होने पर अनुभागसत्त्व का क्रम बदल जाता है । यही क्रम अब आगे तक रहता है ।

पूर्व क्रम

मान	अल्प
क्रोध	विशेष अधिक
माया	विशेष अधिक
लोभ	विशेष अधिक

नवीन क्रम

लोभ	अल्प
माया	अनंत गुणा
मान	अनंत गुणा
क्रोध	अनंत गुणा

आदोलस्स य पढमे, णिव्वत्तिदअपुव्वफड्डुयाणि बहू ।
पडिसमयं पलिदोवम-मूलासंखेज्जभागभजियकमा ॥483॥

- अन्वयार्थः (आदोलस्स य पढमे) आदोलकरण अर्थात् अश्वकर्णकरणकाल के प्रथम समय में (णिव्वत्तिदअपुव्वफड्डुयाणि) रचे गए अपूर्व स्पर्धक (बहू) अधिक हैं।
- उसके आगे (पडिसमयं) प्रत्येक समय में (पलिदोवम-मूलासंखेज्जभागभजियकमा) क्रम से पल्योपम के वर्गमूल के असंख्यातवें भाग से भाजित अपूर्वस्पर्धक होते हैं ॥483॥

प्रत्येक समय के नवीन अपूर्व स्पर्धक

अश्वकर्णकरणकाल के प्रथम समय में रचे गए स्पर्धक सबसे अधिक हैं ।

ये एक गुणहानि के असंख्यातवें भाग मात्र हैं ।

द्वितीय समय में नवीन अपूर्व स्पर्धक = $\frac{\text{प्रथम समय के अपूर्व स्पर्धक}}{\sqrt{प/असंख्यात}}$

याने प्रथम समय के अपूर्व स्पर्धकों से अनंतर समय में रचित अपूर्व स्पर्धक असंख्यात गुणाहीन हो रहे हैं ।

इसी प्रकार आगे भी प्रत्येक समय में पूर्व समय में रचित नवीन स्पर्धकों से अनंतर में रचित नवीन स्पर्धक असंख्यात गुणाहीन हैं ।

आदोलस्स य चरिमे, अपुव्वादिमवग्गणाविभागादो ।
दो चढिमादीणादी, चढिदव्वा मेत्तणंतगुणा ॥484॥

- अन्वयार्थः (आदोलस्स य चरिमे) आदोलकरण के अंतिम समय में (अपुव्वादिमवग्गणाविभागादो) प्रथम अपूर्व स्पर्धक की आदिवर्गणा के अविभागप्रतिच्छेदों से (दो चढिमादीणादी) द्वितीयादि स्पर्धकों की आदिवर्गणा के अविभागप्रतिच्छेद दुगुणे आदि हैं ।
- (मेत्तणंतगुणा चढिदव्वा) अंतिम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं ॥484॥

समस्त अपूर्व स्पर्धकों का अनुभाग

अश्वकर्णकरण के अंतिम समय में सभी अपूर्व स्पर्धकों की रचना हुई ।

यहाँ सबसे जघन्य स्पर्धक की आदि वर्गणा के अविभागप्रतिच्छेद सबसे अल्प हैं ।
(N)

द्वितीय स्पर्धक की आदि वर्गणा की शक्ति $(N \times 2)$ है ।

तृतीय स्पर्धक की आदि वर्गणा की शक्ति $(N \times 3)$ है ।

इस प्रकार अंतिम अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा की शक्ति $(N \times \text{अनंत})$ है ।

जितनेवा स्पर्धक है, उससे जघन्य शक्ति को गुणा करने पर उस स्पर्धक की आदि वर्गणा की शक्ति आती है ।

यहाँ विवक्षित वर्गणा के एक-एक परमाणु में प्राप्त अविभागप्रतिच्छेद की अपेक्षा अल्प-बहुत्व कहा है । सभी परमाणुओं की अपेक्षा तो कुछ कम दुगुणे, तिगुणे आदि क्रम से हैं । क्योंकि प्रत्येक वर्गणा में परमाणुओं की संख्या कम होती जाती है ।

आदोलस्स य पढमे, रसखंडे पाडिदे अपुव्वादो ।
कोहादी अहियकमा, पदेसगुणहाणिफड्डुया तत्तो ॥485॥

• अन्वयार्थः (आदोलस्स य) आदोलकरण के (पढमे रसखंडे पाडिदे) प्रथम अनुभागकांडक का पतन करने पर (अपुव्वादो कोहादी अहियकमा) क्रोधादि अपूर्वस्पर्धक विशेष अधिक क्रम से हैं। (तत्तो) उससे (पदेसगुणहाणिफड्डुया) एकप्रदेश गुणहानि के स्पर्धक (असंखेज्जगुणं) असंख्यातगुणे (होदि) हैं ॥485॥

होदि असंखेज्जगुणं, इगिफड्डयवग्गणा अणंतगुणा ।
तत्तो अणंतगुणिदा, कोहस्स अपुव्वफड्डयाणं च ॥486 ॥
माणादीणहियकमा, लोभगपुव्वं च वग्गणा तेसिं ।
कोहोत्ति य अट्टपदा, अणंतगुणिदक्कमा होत्ति ॥487 ॥

- अन्वयार्थः उससे (इगिफड्डयवग्गणा) एकस्पर्धक संबंधी वर्गणाएँ (अणंतगुणा) अनन्तगुणी हैं।
- (तत्तो) उससे (कोहस्स अपुव्वफड्डयाणं च) क्रोध के अपूर्व स्पर्धकों की वर्गणाएँ (अणंतगुणिदा) अनन्तगुणी हैं।
- (माणादीणहियकमा) उससे मानादिकों के अपूर्वस्पर्धकों की वर्गणा अधिकक्रम से हैं। उससे (लोभगपुव्वं) लोभ के कुल पूर्व स्पर्धक (च) और (तेसिं वग्गणा) उनकी अर्थात् पूर्वस्पर्धकों की कुल वर्गणाएँ (कोहोत्ति य अट्टपदा) क्रोध तक आठ पद (अणंतगुणिदक्कमा) अनन्तगुणित क्रम से (होत्ति) हैं ॥486-487॥

अश्वकर्ण के प्रथम अनुभागकांडक का पतन होने पर प्राप्त अल्प-बहुत्व

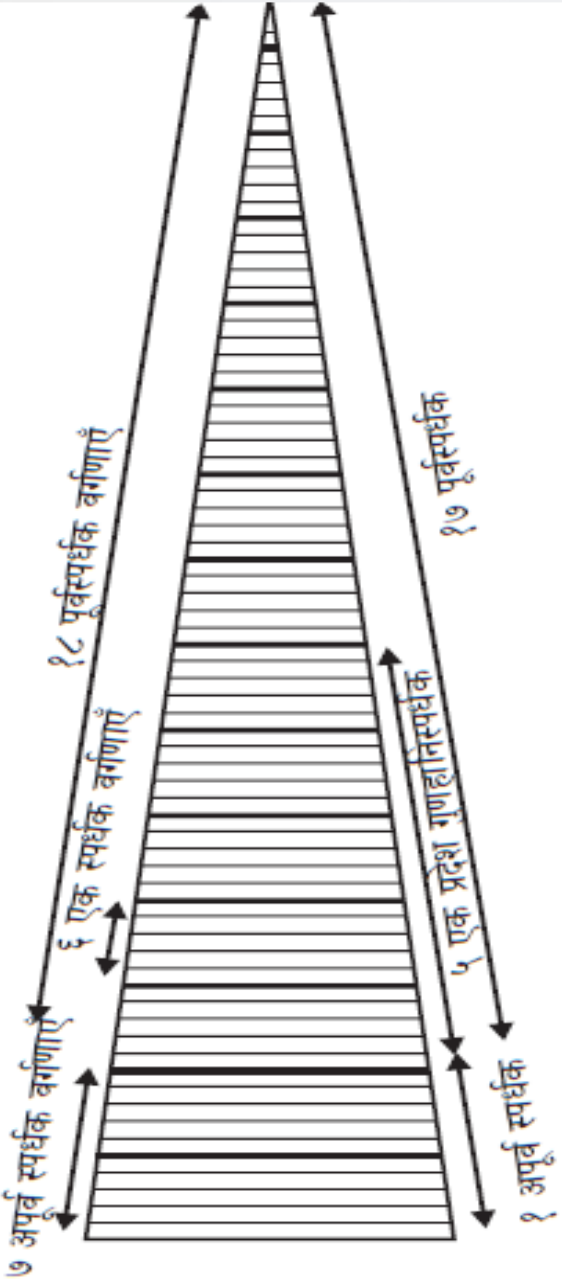
क्र.	पद	गुणकार	अंक संदृष्टि
1	क्रोध के अपूर्व स्पर्धक	स्तोक	2
2	मान के अपूर्व स्पर्धक	विशेष अधिक	3
3	माया के अपूर्व स्पर्धक	विशेष अधिक	4
4	लोभ के अपूर्व स्पर्धक	विशेष अधिक	5
5	अनुभाग संबंधी एक गुणहानि आयाम	असंख्यात गुणा	20
	<p>क्योंकि एक गुणहानि के असंख्यातवें भागप्रमाण ही अपूर्व स्पर्धक रचे जाते हैं । अतः अपूर्व स्पर्धकों से गुणहानि आयाम असंख्यात गुणा है ही ।</p>		

क्र.	पद	गुणकार	अंक संदृष्टि
6	एक स्पर्धक की वर्गणाएँ (याने 1 गुणहानि आयाम से 1 स्पर्धक आयाम बड़ा है।)	अनंत गुणी	100
7	क्रोध के अपूर्व स्पर्धकों की वर्गणाएँ क्योंकि स्पर्धक संख्या \times 1 स्पर्धक की वर्गणा = सर्व वर्गणा । यहाँ स्पर्धक अनंत हैं, इसलिए अनंतगुणा कहा है ।	अनंत गुणी	200 (100 \times 2)
8	मान के अपूर्व स्पर्धकों की वर्गणाएँ	विशेष अधिक	3 \times 100 = 300
9	माया के अपूर्व स्पर्धकों की वर्गणाएँ	विशेष अधिक	4 \times 100 = 400
10	लोभ के अपूर्व स्पर्धकों की वर्गणाएँ	विशेष अधिक	5 \times 100 = 500
	चूँकि क्रोधादि के अपूर्व स्पर्धक विशेष अधिक हैं । इसलिये उनकी वर्गणाएँ भी विशेष अधिक हैं ।		

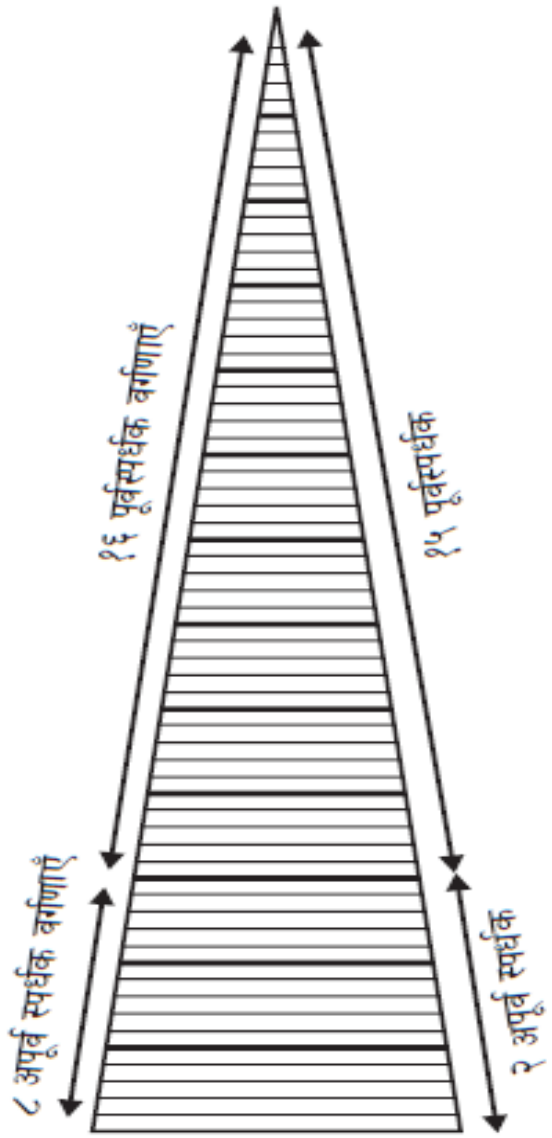
क्र.	पद	गुणकार	अंक संदृष्टि
11	लोभ कषाय के पूर्व स्पर्धक	अनंत गुणा	$20 \times 150 = 3000$
12	लोभ कषाय के पूर्व स्पर्धक की वर्गणाएँ	अनंत गुणा	$3000 \times 100 = 3$ लाख
13	माया कषाय के पूर्व स्पर्धक	अनंत गुणा	$\frac{९ना}{ख ख ख}$
14	माया कषाय के पूर्व स्पर्धक की वर्गणाएँ	अनंत गुणा	$\frac{९ना ४}{ख ख ख}$
15	मान कषाय के पूर्व स्पर्धक	अनंत गुणा	$\frac{९ना}{ख ख}$
16	मान कषाय के पूर्व स्पर्धक की वर्गणाएँ	अनंत गुणा	$\frac{९ना ४}{ख ख}$
17	क्रोध कषाय के पूर्व स्पर्धक	अनंत गुणा	$\frac{९ना}{ख}$
18	क्रोध कषाय के पूर्व स्पर्धक की वर्गणाएँ	अनंत गुणा	$\frac{९ना ४}{ख}$

चूँकि प्रथम अनुभागकांडक का पतन होने पर लोभ से क्रोध तक का अनुभाग अनंत गुणाहीन होता है । इसलिये अंत के 8 पदों में पूर्व स्पर्धकों एवं उनकी वर्गणाओं का अनुभाग अनंतगुणा-2 कहा है ।

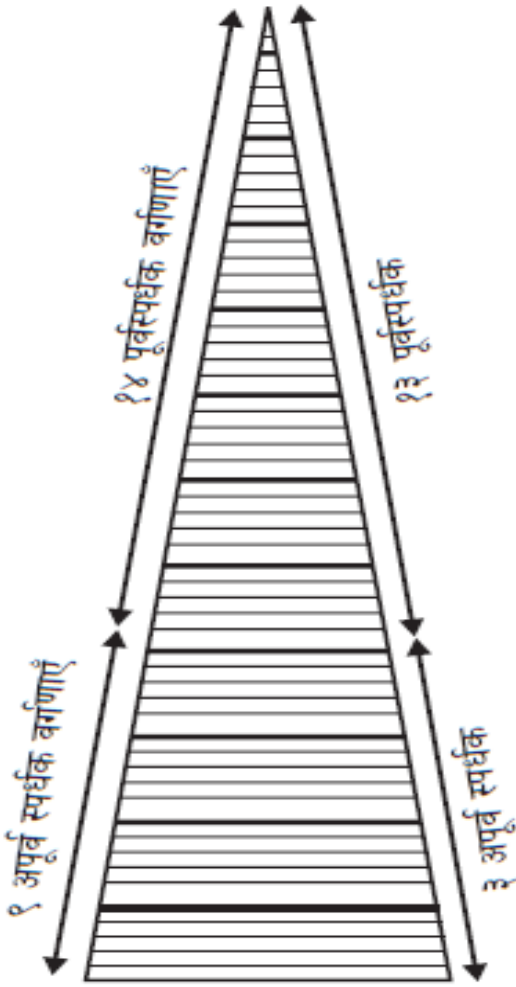
संज्वलन क्रोध पूर्व व अपूर्व स्पर्धक



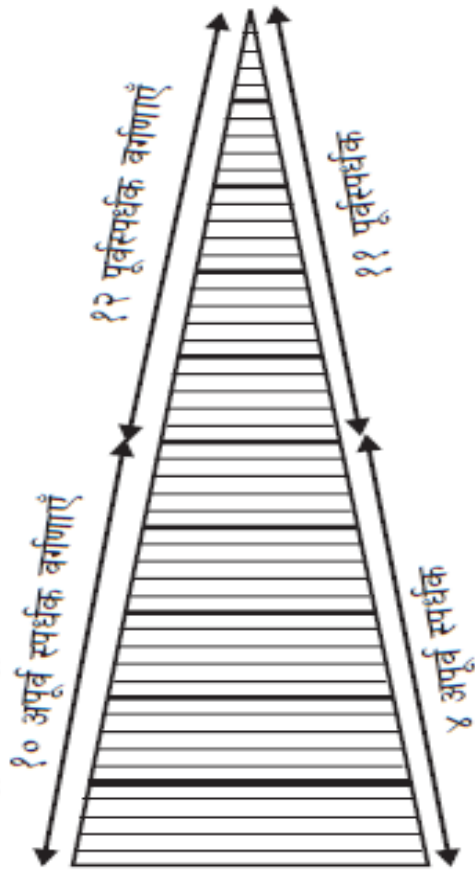
संज्वलन मान पूर्व व अपूर्व स्पर्धक



संज्वलन माया पूर्व व अपूर्व स्पर्धक




संज्वलन लोभ पूर्व व अपूर्व स्पर्धक



अल्प-बहुत्व

रसठिदिखंडाणेवं, संखेज्जसहस्सगाणि गंतूणं ।
तत्थ य अपुव्वफड्डयकरणविही णिट्ठिदा होदी ॥488॥

- अन्वयार्थः (एवं) इस प्रकार (संखेज्जसहस्सगाणि) संख्यात हजार (रसठिदिखंडाण गंतूणं) अनुभागकांडक और स्थितिकांडक जाने पर (तत्थ) वहाँ (अपुव्वफड्डयकरणविही) अपूर्व स्पर्धक करने की विधि (णिट्ठिदा होदी) पूर्ण होती है ॥488॥



अपूर्व स्पर्धक करण – उपसंहार

इस प्रकार संख्यात हजार अनुभागकांडक होते हैं । तब एक स्थितिकांडक पूर्ण होता है ।

ऐसे स्थितिकांडक भी संख्यात हजार होते हैं, तब अपूर्वस्पर्धक करण काल समाप्त होता है ।

ऐसे अंतर्मुहूर्त के प्रत्येक समय में अपूर्व स्पर्धक रचे जाते हैं ।

अश्वकर्णकरण के अंत में अभी भी पूर्व स्पर्धकों का सत्त्व शेष है ।

हयकण्णकरणचरिमे, संजलणाणट्टुवस्सठिदिबंधो ।
वस्साणं संखेज्जसहस्साणि हवंति सेसाणं ॥489॥

- अन्वयार्थः (हयकण्णकरणचरिमे) अश्वकर्णकरण के अंतिम समय में (संजलणाण ठिदिबंधो) संज्वलन कषायों का स्थिति-बंध (अट्टुवस्स) आठ वर्षप्रमाण होता है और (सेसाणं) शेष कर्मों के स्थिति-बंध (वस्साणं संखेज्जसहस्साणि) संख्यात हजार वर्ष प्रमाण (हवंति) होते हैं ॥489॥

ठिदिसत्तमघादीणं, असंखवस्साण होंति घादीणं ।
वस्साणं संखेज्जसहस्साणि हवंति णियमेण ॥490॥

- अन्वयार्थः उसी अंतिम समय में (अघादीणं ठिदिसत्तं) अघाति कर्मों का स्थिति-सत्त्व (असंखवस्साण) असंख्यात वर्ष प्रमाण (होंति) है।
- (घादीणं) घाति कर्मों का स्थिति-सत्त्व (णियमेण) नियम से (वस्साणं संखेज्जसहस्साणि) संख्यात हजार वर्ष (हवंति) है
॥490॥

अश्वकर्ण काल के अंत में स्थिति-बंध, सत्त्व

कर्म	स्थिति-बंध	स्थिति सत्त्व
4 संज्वलन	8 वर्ष	संख्यात हजार वर्ष
3 घातिया	संख्यात हजार वर्ष	संख्यात हजार वर्ष
3 अघातिया	संख्यात हजार वर्ष	असंख्यात वर्ष

- संज्वलन का स्थिति-बंध पहले 16 वर्ष था । अब 8 वर्ष हो गया है ।
- शेष आलाप यद्यपि अश्वकर्ण के प्रारंभ में भी इसी प्रकार थे । परंतु यहाँ बंधापसरण और कांडक घात के द्वारा और भी कम हो गया है ।

- Reference : श्री लब्धिसार टीकासहित अनुवाद – ब्र. सुजाता रोटे, बाहुबली (वर्तमान में आर्यिका श्री शुद्धोहंश्री माताजी)
- For updates / feedback / suggestions, please contact
 - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
 - www.jainkosh.org
 - 📞: 94066-82889
- इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप अवश्य लाभ लें । www.Jainkosh.org/wiki/Videos पेज पर जाएँ एवं लब्धिसार की प्लेलिस्ट चुनें ।